विश्व सांस्कृतिक सम्पदा-भारत 2

सूर्य मंदिर, कोणार्क
खजुराहों के मंदिर
कुतुब परिसर
हुमायूं का मकबरा, दिल्ली

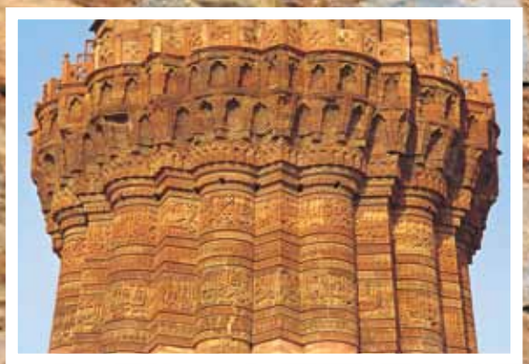

Sun Temple, Konarak
Khajuraho Temples
Qutub Complex
Humayun's Tomb, Delhi

WORLD CULTURAL HERITAGE SITES - INDIA 2

Booklet

विश्व सांस्कृतिक सम्पदा–भारत

1972 में यूनेस्को की आम सभा ने ''विश्व की प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक धरोहर की सुरक्षा'' से संबंधित सभा पारित की। इस सभा का उद्देश्य विश्व की प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक धरोहर की सुरक्षा हेतु विश्व के विभिन्न देशों एवं उनके निवासियों में परस्पर सहयोग को बढ़ावा देना था, ताकि वे इस दिशा में अपना योगदान दे सकें। बहुत से देशों ने इस सभा को समर्थन देकर अपने-अपने देश की सीमाओं में स्थित विशिष्ट सार्वभौमिक महत्व के स्थानों एवं स्मारकों का संरक्षण करने की शपथ ली। सभा ने इस दिशा में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग का रचना विधान तथा विश्व धरोहर समिति गठित की।

इस सभा की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि यह भी थी कि इसने विश्व धरोहर कोष स्थापित किया, जिससे कि विश्व धरोहर में सूचीबद्ध प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक स्थानों के संरक्षण के लिए अंतर्राष्ट्रीय सहायता ली जा सके। विश्व धरोहर कोष में विभिन्न स्रोतों से आर्थिक सहायता मिलती रहती है, जिसे संरक्षण की योजनाओं पर, स्मारकों तथा स्थानों को यथावत् बनाए रखने के कार्यों पर खर्च किया जाता है।

विश्व धरोहर समिति की वर्ष में एक बैठक होती है तथा इसके मुख्य दो कार्य हैं–

- विश्व-धरोहर को पहचानना, अर्थात् उन प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक स्थानों का चयन करना, जो इसके अंग होंगे। इकोमोस (इंटरनेशनल काउन्सिल ऑफ मोन्यूमेंट्स ऐण्ड साइट्स) तथा इयूकन (इंटरनेशनल यूनियन फॉर द कंजरवेशन ऑफ नेचर ऐण्ड नेचुरल रिसोर्सेज) विभिन्न देशों के प्रस्तावों की जांच-पड़ताल कर उनकी मूल्यांकन रिपोर्ट बना कर समिति के कार्यों में सहायता करती है।
- विश्व धरोहर कोष के प्रचालन एवं विभिन्न देशों द्वारा मांगी गई तकनीकी एवं वित्तीय सहायता का निर्धारण करना।

यूनेस्को द्वारा भारत में चुने गए विश्व धरोहर स्थान इस प्रकार हैं–अजंता की गुफाएं; एलोरा की गुफाएं; आगरा का किला; ताज महल, आगरा; सूर्य मंदिर, कोणार्क; महाबलीपुरम् स्मारक समूह; चर्च एवं कॉन्वेन्ट्स, गोआ; खजुराहो स्मारक समूह; हम्पी के स्मारक; फतेहपुर सीकरी-मुगलकालीन शहर; पट्टदकल स्मारक समूह; एलिफेंटा की गुफाएं; बृहदेश्वर मंदिर, तंजावूर, स्तूप साँची; कुतुब स्मारक समूह तथा हुमायूँ का मकबरा, दिल्ली।

सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र, नई दिल्ली का हमेशा यह प्रयास रहा है कि वह लोगों को ''भारतीय संस्कृति'' के बारे में शिक्षित करने के लिए मनमोहक व जानकारी देने वाली पठनीय सामग्री उपलब्ध कराए। ऐसी प्रकाशित सामग्री देश भर के उन स्कूलों में वितरित की जाती है, जहां के अध्यापकों को केन्द्र ने प्रशिक्षण दिया है। इनका उपयोग विभिन्न शैक्षणिक

World Cultural Heritage Sites–India

The General Council of UNESCO in 1972 adopted the "Convention concerning the Protection of the World Natural and Cultural Heritage". The aim of the Convention was to promote cooperation among all nations and people in order to contribute effectively to the protection of the natural and cultural heritage which belongs to all mankind. A large group of nations ratified the Convention and pledged to conserve the sites and monuments within its borders which have been recognised as having an exceptional universal value. To this end, the Convention established a mechanism of international cooperation and set up a World Heritage Committee.

Another important achievement of the Convention was the creation of the World Heritage Fund which allows it to call upon international support for the conservation of the natural and cultural sites listed as the World Heritage. The World Heritage Fund receives incomes from different sources which are used to finance conservation projects and upkeep of the monuments and sites.

The World Heritage Committee, which meets once a year, has two important tasks :

— to define the World Heritage, that is, to select the cultural and natural wonders that are to form part of it. The Committee is helped in this task by ICOMOS (International Council of Monuments and Sites) and IUCN (International Union for the Conservation of Nature and Natural Resources) which carefully examine the proposals of the different countries and draw up an evaluation report on each of them.

— to administer the "World Heritage Fund" and to determine the technical and financial aid to be allocated to the countries which have requested for it.

The World Heritage Sites selected by UNESCO in India are: Ajanta Caves; Ellora Caves; Agra Fort; Taj Mahal, Agra; The Sun Temple, Konarak; Mahabalipuram Group of Monuments; Churches and Convents, Goa; Khajuraho Group of Monuments; Hampi Monuments; Fatehpur Sikri-Mughal City; Group of Monuments at Pattadakal; Elephanta Caves; Brihadesvara Temple, Thanjavur; Stupas, Sanchi; Qutub Complex and Humayun's Tomb, Delhi.

The Centre for Cultural Resources and Training (CCRT)'s endeavour has been to produce informative and attractive educational material to teach about Indian Culture. These materials are distributed to schools in all parts of the country from where teachers have been trained by the CCRT. They are used in a variety of teaching situations to create an understanding of

स्थितियों में भारतीय कलात्मक अनुभूति के अन्तः संबंध को समझाने के लिए किया जाता है। इनका उद्देश्य देश की युवा शक्ति को भारतीय कला एवं संस्कृति में निहित दर्शनशास्त्र एवं सौंदर्य के प्रति संवेदनशील बनाना है।

प्रायः छात्रों को संग्रहालयों एवं ऐतिहासिक स्मारकों की शैक्षणिक यात्रा पर जा कर प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करने का अवसर नहीं मिलता। ऐसी स्थिति में सांस्कृतिक केन्द्र इस पठनीय सामग्री के द्वारा स्कूल की चारदीवारी के अंदर ही छात्रों को भारतीय विचारधारा तथा कला के वैभव व सौंदर्य का साक्षात् परिचय करवाता है।

केन्द्र द्वारा तैयार की गई दृश्य एवं श्रव्य सामग्री के अतिरिक्त इसकी मुद्रित सामग्री की भी देश भर के अध्यापकों ने काफी प्रशंसा की है। अपने बीच लोकप्रिय इस मुद्रित सामग्री की सहायता से वे छात्रों में हमारी प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक संपदा के संरक्षण के प्रति उत्तरदायित्व की भावना उत्पन्न करते हैं।

भारत में विश्व धरोहर सप्ताह मनाने के लिए सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र देश में स्थित विश्व धरोहर के 16 स्थानों पर चार सांस्कृतिक पैकेज भेंट कर रहा है। इनमें से हर पैकेज में 24 रंगीन चित्र हैं। हर चित्र के पीछे उसकी व्यापक जानकारी है। इनके साथ एक पुस्तिका भी है, जिसमें छात्रों एवं अध्यापकों की जानकारी के लिए हर स्मारक का वर्णन तथा संबंधित गतिविधियों का उल्लेख है। यद्यपि इन पैकेजों के 96 रंगीन चित्र इन स्थानों की भव्यता को साकार करने में पूरी तरह सक्षम तो नहीं होंगे, फिर भी एक सीमा तक पुस्तिका छात्रों एवं अध्यापकों को अपनी सांस्कृतिक धरोहर के बारे में ज्यादा से ज्यादा जानकारी दे सकेगी।

स्कूल चाहें तो दल या क्लब बनाकर या फिर अन्य स्वैच्छिक संस्थाओं के साथ मिलकर महत्वपूर्ण स्थानों के बारे में व्यापक खोजबीन कर सकते हैं तथा छात्रों को संरक्षण के आसान तरीके सिखा सकते हैं।

सारे देश में फैले हजारों से ज्यादा पुरातन स्मारकों में से कुछ का संरक्षण भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग, कुछ स्वैच्छिक संस्थाएं, धर्मार्थ न्यास तथा कुछ व्यक्ति कर रहे हैं। यह एक बहुत गर्व की बात है कि यूनेस्को ने भारत के 16 स्मारकों को चुनकर विश्व की धरोहर-सूची में शामिल किया है। यद्यपि देश के बहुसंख्यक स्मारकों को देखते हुए यह संख्या काफी छोटी है, फिर भी इससे उस काल के कलाकारों एवं वास्तुविदों का सम्मान बढ़ा है जिन्होंने 2000 वर्षों की लंबी अवधि में इन स्मारकों को साकार किया था।

the inter-disciplinary approach in Indian artistic manifestations. They aim at sensitising the youth to the philosophy and aesthetics inherent in Indian art and culture. Students do not always get a chance to visit museums and historical monuments to get a first-hand experience of learning about our cultural heritage; hence, the materials of the CCRT bring to the students, in the confinement of the four walls of the classroom, the splendour and beauty in Indian thought and art.

Apart from other audio-visual materials prepared by the CCRT its Folios and Cultural Packages have received wide acclaim and are very popular with teachers in all parts of the country, who are using them to create amongst students a sense of responsibility for conservation of all that is beautiful in our natural and cultural heritage.

To celebrate the World Heritage Week in India the CCRT is presenting four Cultural Packages on the 16 World Heritage Sites in India. These packages contain about 24 pictures each with detailed descriptions of each picture alongwith a booklet giving information about each monument and related activities for students and teachers. The 96 pictures contained in these packages are not adequate to recreate the splendour of these sites. However, within the given constraints, it is hoped that inspired by the activities provided in the booklet, teachers and students will collect more information about their cultural heritage and interweave it into the curriculum subjects that they teach and learn. Schools can also form groups, clubs and work with other voluntary organisations to systematically take up the work of conducting detailed studies of the sites and encourage the youth to learn simple conservation techniques.

Of the thousands of ancient monuments strewn all over the countryside in India, some are protected by the Archaeological Survey of India, a few by voluntary organizations and endowment trusts and some by members of the community at large. It is a matter of great pride that UNESCO has selected 16 monuments of India and placed them on the World Heritage list. Though this number is small in comparison to the large number of monuments in the country, it brings prestige to the artists and architects of India of that bygone era, who made these monuments in a period covering a span of 2000 years.

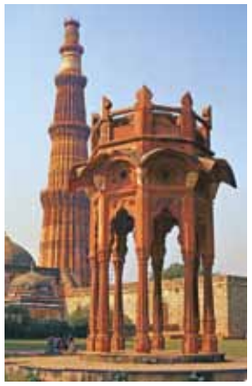

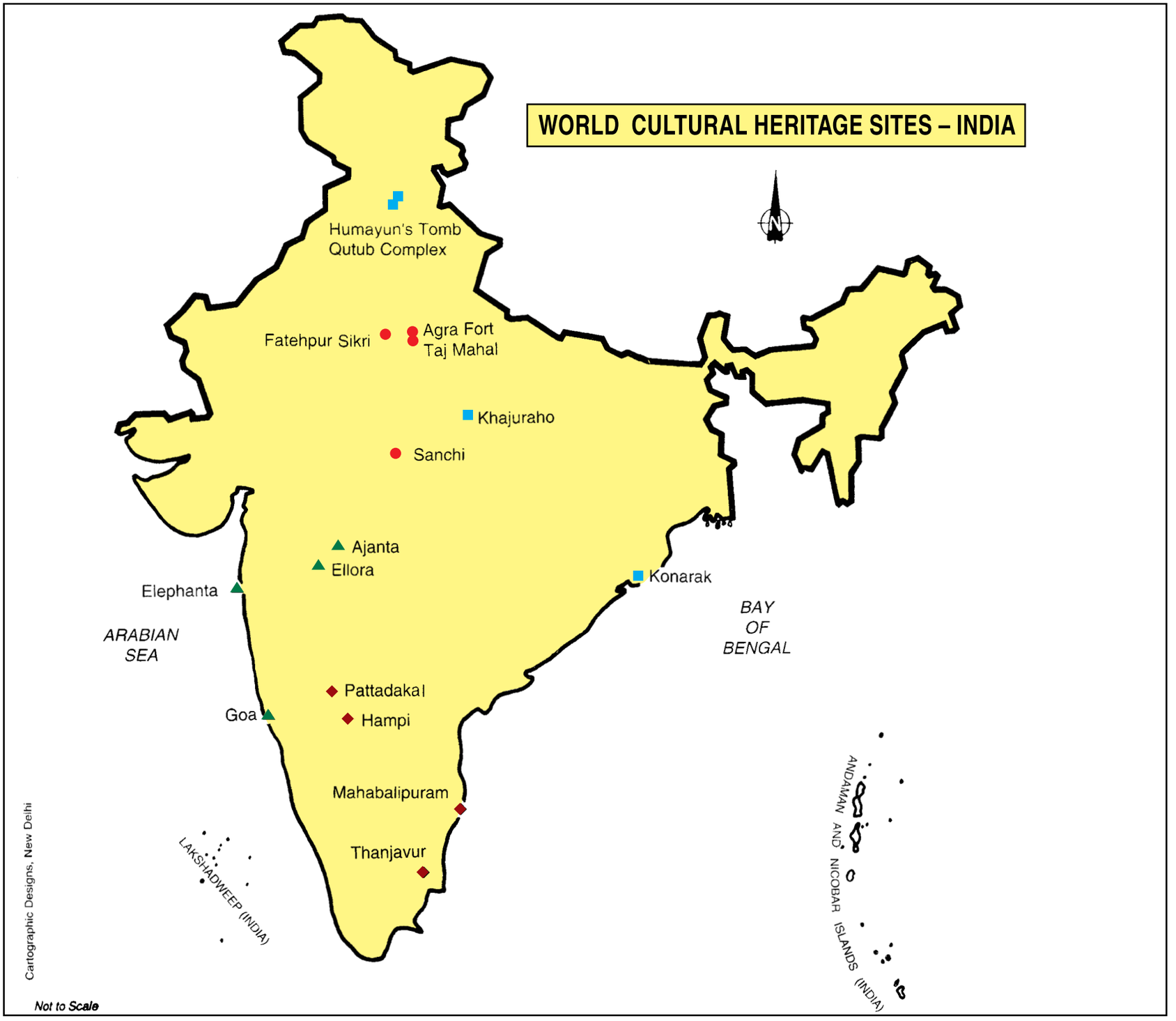

World Cultural Heritage Sites —India 1
Sanchi Stupas, Agra Fort;
Fatehpur Sikri; Taj Mahal, Agra

World Cultural Heritage Sites —India 2
Sun Temple, Konarak; Khajuraho Temples;
Qutub Complex, Humayun's Tomb, Delhi

World Cultural Heritage Sites —India 3
Ajanta Caves; Ellora Caves; Elephanta Caves;
Churches and Convents, Goa

World Cultural Heritage Sites —India 4
Mahabalipuram Monuments; Brihadesvara Temple,
Thanjavur; Pattadakal Temples; Hampi Monuments

सूर्य मंदिर, कोणार्क

कलिंग शासन काल में ओड़िशा में उसकी कला एवं वास्तुनिर्माण की धारा अविच्छिन्न रूप से प्रवाहित होती रही। उस काल में मंदिर तत्कालीन कला के विकास एवं पतन के ऐतिहासिक प्रमाण हैं।

दसवीं-ग्यारहवीं शताब्दी में पूर्वी गंगीय प्रदेश में एक नए शक्तिशाली वंश का प्रादुर्भाव हुआ। नरसिंह देव (प्रथम) इस वंश का प्रख्यात राजा था तथा उसने प्रसिद्ध कोणार्क के सूर्य मंदिर का निर्माण करवाया था। परिष्कृत दार्शनिक विचार, सौंदर्य तथा शैक्षणिक रूप और विकसित खगोलशास्त्र इस सुंदरतम् मंदिर के निर्माण काल में अपने-अपने चरमोत्कर्ष पर पहुंचे।

कोणार्क पुरी जिले में स्थित है तथा बंगाल की खाड़ी के अत्यधिक निकट है। यद्यपि कोणार्क का प्रारंभिक इतिहास पौराणिक एवं दंतकथाओं के जाल में छिपा हुआ सा है, मगर यह माना जाता है कि यह इस के उपास्य देवता कोणार्क के नाम पर आधारित है। कोणार्क का अर्थ है– अर्क (सूर्य) का कोना। इस क्षेत्र की मूर्तिकला एवं वास्तुकला पर इसके आसपास के क्षेत्रों तथा इसके ऐतिहासिक संबंधों का काफी प्रभाव है।

यह मंदिर एक चतुष्कोणीय प्रांगण में स्थित है। इसे एक ऊंचे चबूतरे पर बनाया गया है तथा इसका मुख पूर्व की ओर है। मंदिर में रेखा देऊल तथा जगमोहन था। जगमोहन के सम्मुख नट-मंदिर है। आज इसकी पिरामिड के आकार की छत विद्यमान नहीं है, फिर भी इसके कुछ सुंदरतम भाग, जैसे कि प्रचुर रूप से उत्कीर्ण स्तंभ आदि को सुव्यवस्थित रूप में संरक्षित किया गया है।

अलंकरण करने वाली मूर्तियों में ज्यामितीय आभूषण, प्रतिरूप भवन, अप्सराओं के प्रतीक, आकाशीय परियां, देवदासियां तथा संगीतकारों की आकृतियां हैं।

कोणार्क के इस सूर्य मंदिर में तीन प्रकार के पत्थरों का इस्तेमाल किया गया है। दरवाजों की चौखट तथा कुछ मूर्तियां क्लोराइट पत्थर की हैं। चबूतरा तथा सीढ़ियाँ लेटेराइट की तथा शेष भाग निम्न श्रेणी के खोंडलाइट पत्थरों से बना है। यह माना जाता है कि इन पत्थरों को कई किलोमीटर दूर के स्थानों से यहां लाया गया था, क्योंकि ये आज इस क्षेत्र में नहीं पाए गए हैं। यह भी ज्ञात हुआ है कि पत्थरों को आपस में जोड़ने के लिए किसी गारे-मिट्टी के स्थान पर गिट्टियों का उपयोग किया गया था।

Sun Temple, Konarak

The art and architecture of Odisha had an unbroken tradition of temple building during the Kalinga rule. The series of extant temples of that period are an historical record of the Kalinga Order from its beginning to the decline of that rule.

In the 10th-11th century A.D. rose a new powerful dynasty of the Eastern Gangas, the most famous of whom was Narasimha Deval, who built the renowned *Surya Mandir* at Konarak in Odisha. An high level of sophistication in philosophical thought, aesthetics, ideational concepts and advanced astronomy had culminated in the construction of this beautiful temple.

Konarak is in the district of Puri and is very near to the Bay of Bengal. Though the early history of Konarak is shrouded in myths and legends, it is believed that the name is derived from the name of the presiding deity Konarak, meaning the *Arka* (Sun) of *Kona* (corner). The style of architecture and sculpture of this region, was also influenced, by its contact with the neighbouring areas and its historical connections.

The Sun temple at Konarak is situated within the centre of a large quadrangular compound. The main structure is facing the east and the temple has been constructed on a high plinth. The temple consisted of a *rekha deul* and a *jagamohana*. In front of the *jagamohana* was the *nata-mandir,* the dance pavilion. Its pyramid shaped roof has been lost, but some of the other elements such as the pillars covered in reliefs and lavishly carved base are preserved in excellent condition. Decorative sculptures include geometric ornaments and miniature buildings, the motif of *apsaras* — celestial nymphs, *devdasis* — temple dancing girls and musicians.

In this temple three kinds of stones have been used. The door frames and a few sculptures are in chlorite, staircases and platforms are in laterite whereas the rest of the structure was built in a poor quality of khondalite stone. It is believed that these stones were brought here from a distance of many kilometres as none of these three kinds of stones are available in this area today. It has been found that though mortar was not used, dowels were employed to hold the stones together.

खजुराहो

खजुराहो काफी पहले चंदेल राजपूतों की राजधानी था, मगर वर्तमान में यह मध्य प्रदेश के छतरपुर जिले का एक गांव है। यह महोबा से दक्षिण में 55 किलोमीटर दूर तथा छतरपुर के पूर्व में 47 किलोमीटर दूर स्थित है। यह क्षेत्र 9वीं से 12वीं शताब्दी के बीच हुए महान कलात्मक एवं सांस्कृतिक विकास का साक्षी है। खजुराहो के आसपास के क्षेत्र को विभिन्न नामों, जैसे कि वत्स, जेजाभुक्ति, बुंदेलखंड, खजूरवाहक तथा खजूरपुर, से भी जाना जाता था। खजूरपुर का अर्थ है, सुनहरे खजूर के पत्तों वाला गांव।

चंदेलों द्वारा यहां बनाए गए भव्य मंदिरों के कारण यह एक महत्वपूर्ण स्थान बन गया है। चंदेल या चंद्रात्रेय, जैसा कि शिला-लेखों में वर्णित है, वे अपनी उत्पत्ति को पौराणिक चंद्रवर्मन के जरिए चंद्रमा से मानते थे; इसी कारण वे स्वयं को चंद्रवंशी भी कहते थे। सत्ता में आने से पहले ये लोग गुर्जर-प्रतिहारों के जागीरदार थे। चंदेलों के काल में संस्कृति के सभी पक्षों का पूर्ण विकास हुआ, क्योंकि उन्होंने इसे प्रश्रय दिया हुआ था। साथ ही, साहित्यिक कलाएं भी विकसित हुईं।

प्राय: यह माना जाता है कि चंदेलों ने यहाँ लगभग अस्सी मंदिरों का निर्माण करवाया था, लेकिन उनमें से लगभग पच्चीस ही शेष हैं।

खजुराहो के सभी मंदिर कुछ किलोमीटर के घेरे में स्थित हैं। ये सभी मंदिर पूर्णत: समांग रूप को समूह में प्रस्तुत करते हैं तथा ऐसा प्रतीत होता है कि राजाओं के एक लंबे समय तक चले प्रयासों के फलस्वरूप निर्मित हुए होंगे। यही कारण है कि इनमें से अधिकांश मंदिर चाहे वे शैव-मत के हों, वैष्णव मत के या फिर जैन धर्म के, सभी एक विशेष कल्पना या शैली को दर्शाते हैं। ये सभी मंदिर ठोस तथा ऊंचे चबूतरे (जगती) पर निर्मित हैं तथा इनके चारों तरफ पारंपरिक दीवारों का घेरा नहीं है। मंदिरों के विमान चबूतरे से ऊपर उठकर काफी ऊंचाई तक जाते हैं।

प्रारंभिक काल में निर्मित सभी भवन ग्रेनाइट से बने हैं। चौंसठ योगिनी का मंदिर पूर्णत: इसी पत्थर से बना है। बाद में जाकर ग्रेनाइट व बलुआ पत्थर का मिश्रित उपयोग हुआ। यहां ऐसे कई मंदिर हैं, जो पूर्णत: पाण्डु, गुलाबी या पीली आभा वाले बलुआ पत्थरों से बने हैं।

इन मंदिरों में विभिन्न विषयों को बड़ी सूक्ष्मता से उत्कीर्ण किया गया है। ये तोरण की अलंकरण शैली की कारीगरी के अनुपम उदाहरण हैं।

मौटे तौर पर खजुराहो के मंदिरों को पश्चिमी, पूर्वी तथा दक्षिणी क्षेत्र-समूहों में विभाजित किया गया है। चौंसठ योगिनी, लागुआं महादेव मंदिर, कंदरिया महादेव मंदिर, देवी जगदंबा का मंदिर, महावीर मंदिर, चित्रगुप्त मंदिर, विश्वनाथ मंदिर, पार्वती मंदिर, लक्ष्मण मंदिर, पार्श्वनाथ मंदिर, दुलादेव मंदिर तथा चतुर्भुज मंदिर आदि कुछ प्रसिद्ध हैं।

वर्तमान में खजुराहो स्थाई रूप से रहने वाले कुछ हज़ार व्यक्तियों का एक गांव भर रह गया है। वे लोग अपनी-अपनी भूमि पर गेहूँ तथा सब्जियां उत्पन्न करते हैं तथा अपने पशुओं को पहाड़ी की ढलानों और चरागाहों में चराते हैं। लेकिन इसके बावजूद यह एक पर्यटन-स्थल भी है। हर वर्ष हजारों पर्यटक यहां की भव्य वास्तुकला व मूर्तिकला को देखने के लिए आते रहते हैं।

Khajuraho

Khajuraho, once the capital of the Chandella Rajputs, is now a village in the Chhatarpur district of Madhya Pradesh. It lies 55 kilometres south of Mahoba and 47 kilometres east of Chhatarpur. The area witnessed a great artistic and cultural activity from the 9th to the 12th century A.D. The tract around Khajuraho has been referred to by various names such as: Vatsa, Jejabhukti, Bundelkhand, Khajjurvahaka and Khajurapura, meaning the village *(pura)* with golden date palms *(khajura).*

Khajuraho is an important place because of the magnificent temples built here by the Chandellas. The Chandellas—or Chandratreyas as they have been referred to in the inscriptions—trace their origin to the moon *(Chandra vanshi)* through the legendry Chandravarman. Before coming to power, the Chandellas were feudatories of the Gurjar-Pratiharas. During their period, all aspects of culture flourished; the Chandellas also patronized the literary arts.

It is commonly believed that over eighty temples were constructed by the Chandellas, although only about twenty-five survive today.

The temples at Khajuraho are situated within a radius of a few kilometres. These temples represent a strikingly homogeneous group and seem to be the product of a continuous, concerted effort by the rulers over a period of time. Because of this, most of them share certain conceptual and stylistic features, regardless of whether they are Saivite, Vaisnavite or Jain Temples. The temples at Khajuraho have been built on high and solid platforms without the customary enclosure walls. The *vimana* of the temple rises from the platform and its vertical towers reach high, piercing the sky, as it were.

In the early period, granite was used for buildings and the extant Chausath Yogini temple has been built exclusively of this stone. Later, granite and sandstone were used simultaneously. There are other temples at Khajuraho which are built of sandstone of fine grain with varying shades of buff, pink, or pale yellow.

The iconography details the sculptural record of battles, and festive processions and also includes numerous depictions of loving couples. Delicate workmanship of *toran* decoration, as seen in these temples testify the genius and skill of the sculptors.

The temples at Khajuraho have been divided into three broad zones—the western, eastern and southern groups. Some of the famous temples include: Chousath Yogini temple, Lalguan Mahadeva temple, Kandariya Mahadeva temple, Devi Jagadamba temple, Mahavira temple, Chitragupta temple, Vishwanatha temple, Parvati temple, Lakshmana temple, Parsvanatha temple, Duladeva temple and the Chaturbhuja temple.

Today, Khajuraho remains a village having a permanent population of a few thousand inhabitants who cultivate wheat and vegetables on their share of land and graze their cattle and goats on the dry pastures and hillsides. However, it is a tourist town also and thousands of visitors come every year to see the splendour of architecture and sculptures of the temples at Khajuraho.

कुतुब-परिसर, दिल्ली

दिल्ली भारत के सर्वाधिक प्राचीन तथा ऐतिहासिक नगरों में से एक है। यह अनेक महान साम्राज्यों और शक्तिशाली राज्यों की राजधानी रही है तथा कई सभ्यताओं के ह्रास और पतन की साक्षी है। दिल्ली में प्राचीनतम अधिवास का संदर्भ हमें प्रसिद्ध महाकाव्य *महाभारत* में प्राप्त होता है, जिसमें यमुना नदी के किनारे बसे इन्द्रप्रस्थ नगर का उल्लेख है। संभवत: दिल्ली का स्थान विशेष के रूप में प्रयोग सर्वप्रथम पहली और दूसरी शताब्दी ईसा प. में किया गया। विश्वस्त सूत्रों के अनुसार अठारहवीं शताब्दी ईसा प. में दिल्ली की राजपूतों के तोमर वंश ने खोज की। ग्यारह सौ इक्यानवें ईसा प. में महानतम राजपूत राजकुमार पृथ्वीराज चौहान ने तुर्की आक्रमकों के भारी आक्रमण का सामना किया। तराईन की दूसरी लड़ाई 1992 ईसा प. में पृथ्वीराज चौहान तथा मोहम्मद गोरी के बीच हुई, जिसमें राजपूतों की बुरी तरह हार हुई। तब से 1857 तक अंग्रेजों ने अंतिम मुगल सम्राटों को अपदस्थ और निर्वासित किया, दिल्ली की गद्दी (सिंहासन) पर हमेशा मुस्लिम सुल्तान का ही अधिकार रहा।

गौर के मोहम्मद ने अपने पीछे कोई वंशज नहीं छोड़ा और अपने प्रतिनिधि कुतुब-उद्-दीन ऐबक को नायब नियुक्त किया। चूँकि कुतुब-उद्-दीन ने अपना जीवन एक गुलाम के रूप में आरंभ किया था, अत: इतिहासकार सामान्यतया उसके वंश का संदर्भ गुलाम वंश के रूप में देते हैं। इस वंश के लिए शब्द का भी प्रयोग किया जाता है।

दक्षिण दिल्ली में स्थित कुतुब परिसर में बहुत-सी इमारतें हैं, जिनमें एक मस्जिद, एक विजयमीनार, एक मक़बरा, एक मदरसा, एक विशाल प्रवेशमार्ग और आश्चर्यजनक प्राचीन लौह स्तंभ सम्मिलित हैं। कुतुब-उद्-दीन ऐबक ने पहली विशाल मस्जिद, एक विखंडित मंदिर के चबूतरे पर, हिन्दू किले के अन्दर बनवाई। मस्जिद के प्रांगण में अभिलेखों सहित एक 1500 वर्ष पुराना लौह स्तंभ है। इस स्तंभ के विषय में सर्वाधिक आश्चर्यजनक तथ्य यह है कि लगभग 1500 वर्ष के बाद भी यह धूप और बारिश सहने के बावजूद इस स्तंभ पर जंग का एक भी निशान नहीं है। कुतुबद्दीन ऐबक ने विजय मीनार के रूप में इस विशालकाय 72.5 मीटर ऊंची मीनार का निर्माण किया। कुतुब मीनार के नाम से प्रसिद्ध यह मीनार कुव्वतुल इस्लाम मस्जिद के निकट है। मूलत: इसकी चार मंजिलें थीं। इस शुंडाकार मीनार के आधारतल का घेरा 15 मी. और शिखर का 3 मीटर है, जिस पर एक स्तंभयुक्त छतरी अवस्थित है। 1368 में बिजली (तड़ित आघात) द्वारा मीनार के प्रभावित होने पर, फिरोज़शाह तुगलक ने दो ऊपरी गोलाकार मंजिलें बनवाईं। शम्सुद्दीन इल्तुतमिश ने 1229 ईस्वी सन् में, मूल मस्जिद के साथ सह अक्षीय रूप में, आच्छादित मार्ग और नए मेहराबी आवरण जोड़कर कुव्वतुल इस्लाम मस्ज़िद के आकार को दोगुना किया। स्वयं इल्तुतमिश के मकबरे के रूप में, मस्जिद के उत्तर-पश्चिमी कोने के निकट एक वर्गाकार गुम्बदयुक्त कक्ष बनवा कर जोड़ा गया। इस पर ज्यामितीय अलंकरण की धारियां और रूढ़ शैलीयुक्त कमल की परिकल्पना सहित कूफ़ी और नश्किया चरित्रों से युक्त अभिलेखों की पट्टियों को अन्तर्ग्रथित किया गया है।

इस परिसर में अवस्थित सभी इमारतें समय-समय पर सम्पन्न गतिविधियों तथा व्यतीत सुनहरे काल की गवाही देती-सी प्रतीत होती हैं।

The Qutub Complex, Delhi

Delhi is one of the most ancient and historic cities of India. It has been the capital of mighty empires and powerful kingdoms. It has seen the ebb and flow of many civilizations. The earliest reference to a settlement at Delhi is to be found in the famous epic, the Mahabharata, which mentions a city called Indraprastha built along the bank of river Yamuna. Delhi,as the name of a place, seems to have been referred to for the first time during the first and second centuries A.D. The more reliable notion is that Delhi was founded in the eighth century A.D. by the Tomars, a clan of the Rajputs. Prithviraj Chauhan, one of the greatest Rajput Princes, faced great wave of Turkish invaders in 1197 A.D. The second battle of Tarain, in 1192 A.D. between Prithviraj Chauhan and Mohd. Ghori ended in complete defeat for the Rajputs. From that day on, until 1857 when the last of the Mughal emperors was deposed and exiled by the British, a Muslim monarch always occupied the throne of Delhi.

Mohammad of Ghori left behind no descendants and appointed his deputy Qutub-ud-Din Aibak as his Viceroy. Since Qutub-ud-Din had started life as a slave, historians have generally referred to his dynasty as the 'slave dynasty'. Another term used for this dynasty is Mamluks.

In the Qutub Complex which is situated in South Delhi one finds a variety of buildings. These include a mosque, a victory tower or minar, a tomb, a madarsa, a grand gateway and amazingly an ancient Iron pillar. Built by Qutub-ud-Din Aibak, the first great mosque was constructed inside a Hindu citadel on the platform of a dismantled temple site. In the courtyard of the mosque, a 1500 years old Iron pillar with inscriptions is standing. The most surprising fact is that the pillar shows no traces of rust inspite of exposure to sun and rain for nearly fifteen hundred years. The enormous minar 72.5 mt. high was created by Qutub-ud-Din Aibak as a tower of victory. This minar known as Qutub Minar, adjacent to Quwwat-ul-Islam mosque, originally had four storeys, tapering from 15 m diameter at the base to 3 m at the top, crowned by a pillared kiosk. In 1368 after lightening had struck the minaret, the two upper rounded storeys were added by Firoz Shah. In 1229 A.D, Shams-ud Din Iltutmish doubled the size of the Quwwat-ul-Islam Mosque by adding new arched screens and arcades arranged co-axillary with the original mosque. His own tomb, a square domed chamber was added adjacent to the north-west corner of the mosque. Bands of inscription with kufic and naskh characters are interweaved with stylized lotus and bands of geometric ornament.

All the buildings in the complex present the glorious period and activities that took place here from time to time.

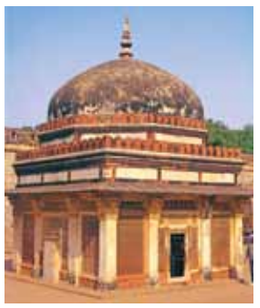

हुमायूँ का मक़बरा, दिल्ली

हुमायूँ का मक़बरा, दक्षिण-पूर्व दिल्ली में हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया के मकबरे के निकट स्थित है। इसकी सुन्दरता और भव्यता मुगल शैली की वास्तुकलात्मक गतिविधियों का अंतिम प्रमाण है। वर्तमान मथुरा रोड़ से होकर हुमायूँ के मकबरे पर पहुंचा जा सकता है।

पूर्व सोलहवीं शताब्दी का इतिहास राजनैतिक रूप से अशांत जनजातीय राज्य के रूप में दिल्ली सल्तनत को चित्रांकित करता है। लोदी वंश के अंतिम सम्राट, इब्राहीम लोदी को पराजित करने के पश्चात् बाबर ने 1526 ईसा प. में मुगलवंश का आरम्भ किया।

बाबर सांस्कृतिक और सौन्दर्यपरक रुचियों से संपन्न व्यक्ति था। अपनी मातृभूमि अफगानिस्तान स्थित काबुल की याद को तरोताजा रखने के लिए बाबर ने वृक्षों पक्षियों तथा बहते पानी से घिरे हुए बाग बनवाए। बाबर ने अपनी स्मृतियाँ–''बाबरनामा'' को तुर्की भाषा में बहुत ही भावुकता, उमंग और स्पष्टता से लिखा। बाबर के जीवन और उसके अवकाश के क्षणों के विषय में पढ़कर आनंद प्राप्त होता है कि बाबर की मृत्यु 1530 ईस्वी सन् में हुई और अपने सुपुत्र हुमायूँ के लिए जो साम्राज्य छोड़ा, वह शानदार होने पर भी अस्थिर था।

हुमायूँ अत्यंत भावुक व्यक्ति था। मुगल चित्रकला शैली का प्रवर्तक हुमायूँ ही था, पर एक वीर और अनुभवी सेनापति होने के बावजूद उसके व्यक्तित्व में बाबर के समान उत्साह और दृढ़ता नहीं थी। हुमायूँ की मृत्यु अकस्मात् ही 1556 ईस्वी सन् में हुई, तब उसकी दुखी रानी हाजी बेगम (बेगा बेगम) भारतीय और ईरानी डिज़ाइनरों तथा कारीगरों को बुलवा कर हुमायूँ की याद में इस शानदार भव्य मकबरे का निर्माण करवाया।

इस इमारत के निर्माण से भारत की मकबरा-निर्माण-कला शैली में परिवर्तन आया। हुमायूँ के मकबरे को मुगल वास्तुकला का एक उत्कृष्ट उदाहरण माना जाता है। हुमायूँ का मकबरा अपने स्थल, अभिन्यास, योजना में परंपरागत पूर्व-मुगलकालीन मकबरों से पूर्णतया भिन्न है। दरअसल यह भारतीय वास्तुकला के क्षेत्र में एक अभूतपूर्व नवीनता है। प्रमुख वास्तुकार मिराक़ मिर्ज़ा ग़ियात, एक ईरानी वास्तुकार था, जिसने वास्तुकला में एक नई शैली को प्रश्रय दिया और यहीं से भारतीय इमारतों पर फारसी प्रभाव का आरंभ हुआ। मकबरे तक पहुंचने के लिए बू-हलीमा बाग और उसके पूर्वी प्रवेश मार्ग से होकर गुज़रना पड़ता है। सामने ही हुमायूँ के मकबरे के पश्चिमी प्रवेश मार्ग की विशाल नाकेदार मेहराब है। फ़ारसी चार बाग सिद्धान्त पर आधारित आलंकारिक वर्गाकार बाग के रूप में मकबरे का विन्यास एक महत्वपूर्ण वास्तुकलात्मक नवीनता है। एक बड़े वर्गाकार बाग के मध्य में यह मक़बरा स्थित है। दक्षिण तथा पश्चिम की ओर ऊंची दीवारों तथा प्रवेशमार्गों से मक़बरा घिरा हुआ है। लाल पत्थर तथा श्वेत संगमरमर की धारियों सहित सलेटी पत्थर से इसके द्वारमार्ग निर्मित हैं। मकबरे के चार घनाकार बाह्य कक्ष हैं, जो एक केन्द्रीय कक्ष के साथ ज्यामितीय रूप से जुड़े होने पर भी दृश्यात्मक और स्थानिक रूप से स्वतंत्र (अलग) हैं।

हुमायूँ के मकबरे के समान, अन्य किसी मक़बरे में मुगल वंश के इतने सारे सम्राटों की कब्रें नहीं हैं। हालाँकि हुमायूँ के तीन उत्तराधिकारियों को अन्यत्र दफनाया गया, पर हुमायूँ के बाद के अन्य सम्राटों की कब्रें हुमायूँ की कब्र के पास ही बनी हुई हैं। फिर से, यहीं पर 1857 ईस्वी सन. में कर्नल हडसन ने अंतिम मुगल सम्राट, बहादुर शाह ज़फ़र को बंदी बनाकर म्यानमार भेजा गया और वे अपनी मृत्यु तक वहीं रहे।

इस क्षेत्र में अन्य मकबरों के अतिरिक्त, हुमायूँ के मकबरे के पास, उत्तर-पूर्वी और एक सिख गुरुद्वारा अवस्थित है।

Humayun's Tomb, Delhi

Humayun's Tomb is located near the shrine of Hazrat Nizamuddin Aulia in South-East Delhi. Its beauty and splendour is a lasting testimony to the architectural achievements of the Mughals. The route leading to it diverges from present Mathura Road.

The history of the early sixteenth century A.D. present a picture of the Delhi Sultanate as a politically disturbed tribal state. Babur after defeating Ibrahim Lodi, the last emperor of the Lodi dynasty founded the Mughal dynasty in 1526 A.D.

Babur was a man of culture and exceptional aesthetic taste. To remind him of Kabul in Afghanistan his homeland, Babur laid out gardens surrounded by trees, birds and flowing water. Babu's memoirs, the Baburnama is written in Turkish with great sensitivity, humour and frankness. It is a delight to read about his life & leisures, Babur died in 1530 A.D. and the empire that Babur left for his son Humayun was magnificent but unstable.

Humayun was extremely sentimental. It was Humayun who was responsible for founding the Mughal school of painting. While he was brave and experienced as a military commander, he lacked Babur's vigour and determination. Humayun died unexpectedly in 1556 A.D., his grieving queen Haji Begum (Bega Begum) assembled both Indian and Iranian designers and artisans who raised this magnificent mausoleum in Humayun's memory.

This creation proved a turning point in the construction of mausoleum in India. It is considered to be an excellent example of Mughal architecture. Humayun's tomb is altogether different from the typical pre-Mughal tombs in respect of its site, lay-out, plan and design and it is, in fact, an unprecedented innovation on the Indian architectural scene. The chief architect was an Iranian, Mirak Mirza Ghiyath, marking the initiation of a new style in architecture and the beginning of Persian influence on Indian buildings. In approaching the mausoleum one has to cross the Bu Halima garden and its eastern gateway of Humayun's tomb-enclosure. An important innovation is the setting of the tomb in an ornamental square garden based on the Persian *char-bagh* principle.

The mausoleum is located in the midst of a large square garden. It is screened by high walls, with gateways to the south and west. The gateways are built of grey stone with bands of red stone and marble. The tomb has four cubic outer chambers which are linked geometrically to a central chamber but are independent - visually and spatially - a fusion of the Hindu idea of an enclosed sanctuary and an Iranian concept of sequence of rooms.

No other mausoleum contains so many distinguished members of the Mughal dynasty as the mausoleum of Humayun. Although his three immediate successors were buried elsewhere most of the later emperors lie close to him. It was here again in 1857 A.D., Col. Hudson captured the last Mughal emperor Bahadur Shah Zafar who was sent to Myanmar and kept there till his death.

Apart from other mausoleums in the vicinity, a Sikh gurudwara stands close to the Humayun's tomb to its north-eastern side.

शिखर
Shikhara

सामान्यतया, मंदिर शब्द सुनते ही हमारे समक्ष गर्भ-गृह की चोटी पर बनी ऊंची अधि-रचना आ जाती है। 'शिखर' का शाब्दिक अर्थ 'पर्वत की चोटी' है, जो विशेष रूप से भारतीय मंदिर की अधि-रचना का पर्याय है।

विद्वानों का मत है कि 'शिखर' का अर्थ 'सिर' है और इसे 'शिखा' शब्द से ग्रहण किया गया है, जिसका अर्थ सिर के पीछे एक रूढ़िवादी हिन्दू द्वारा रखे जाने वाला बालों का गुच्छा है।

Generally, the accepted form of the temple is the high superstructure built on top of the *garbha-griha.*

Shikhara which means 'mountain peak' is the superstructure of the Indian temple. Scholars mention that the *Shikhara* meaning 'head' has been derived from '*Shikha*', the tuft of hair worn by an orthodox Hindu on the crown of the head.

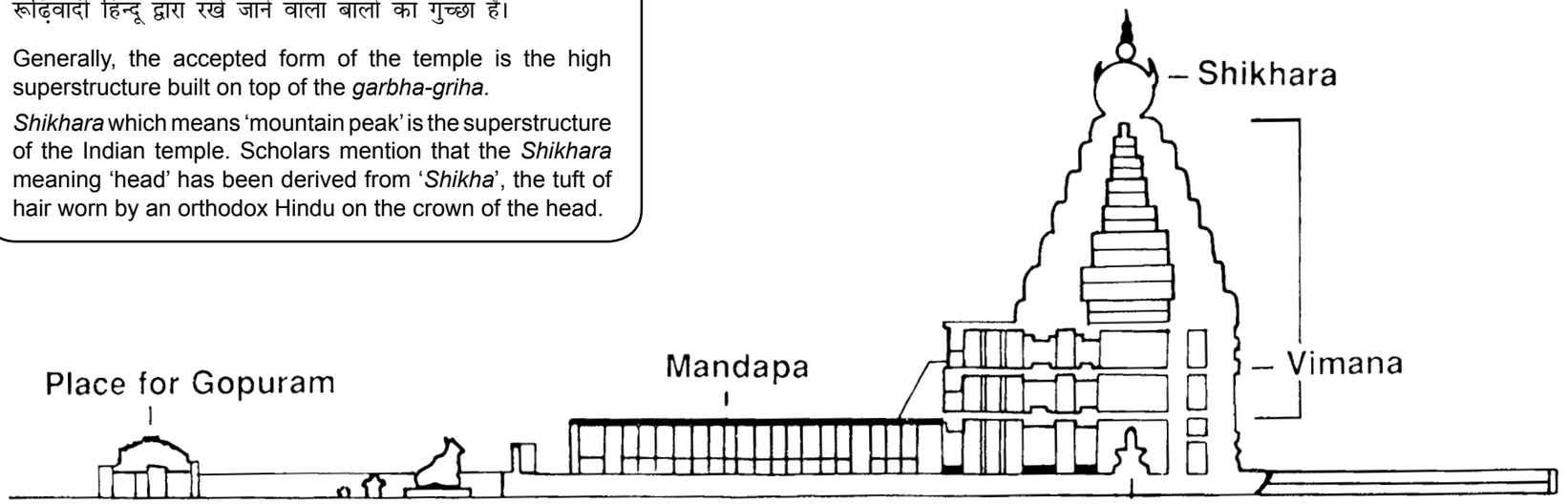

PLAN OF TEMPLE

विमान
Vimana

यह संरचना मूलत: स्थल-योजना में चौकोर अथवा आयताकार होती है और यह पिरामिडीय ढांचे की तरह ऊपर को कम होता जाता है। इसे कई मंजिलों तक ऊंचा बनाया जाता है।

'शास्त्रों के अनुसार' विमान विविध आनुपातिक परिणामों के साथ निर्मित मंदिर का नाम है।

This is a structure which is basically square or rectangular in ground plan. It rises several storeys high and is pyramidal in shape.

Vimana is the name of the temple built according to the proportionate measurements laid down in the *shastras.*

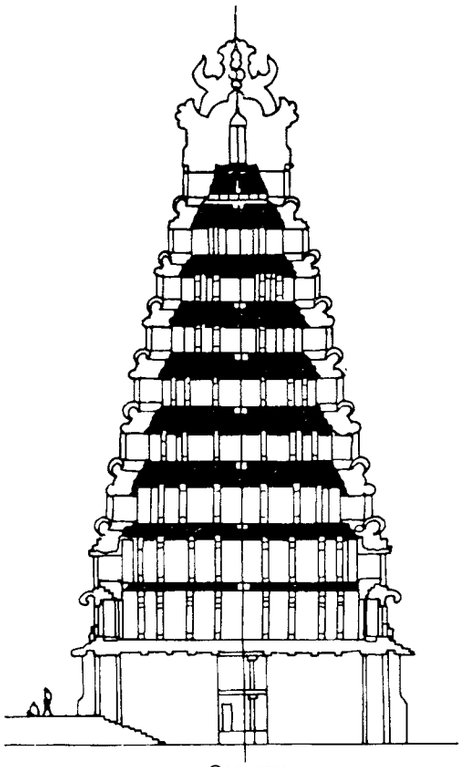

Gopuram

गर्भ-गृह
Garbha-Griha

गर्भ-गृह, निश्चित रूप से एक गहरा अंधेरा कक्ष होता है, जहां मंदिर की प्रमुख देवी को स्थापित किया जाता है। यह कक्ष वास्तुकला योजना में चौकोर अथवा कभी-कभी आयताकार होता है और कभी-कभी बहुभुजी अथवा गोलाकार होता है।

अपने नाम के अनुसार यह इमारत 'गर्भ' की भाँति मानी जाती है तथा अनन्त काल से गर्भ-गृह का यह स्वरूप अपरिवर्तित है। नाम तथा रूप से भी गर्भ-गृह प्राथमिक महत्व का स्थान है। यह वह स्थान है जहाँ भक्तगण अपने सांसारिक विचारों को थोड़ी देर के लिए भूल कर ईश्वर से समागम करते हैं।

The *Garbha-Griha* is essentially a small dark chamber where the main deity of the temple is established. It is square in plan or very rarely rectangular or polygonal or circular.

It is believed to be the "womb" and has remained unchanged throughout the ages. By its name and form, the *garbha-griha* is a place of primary significance. This is the place towards which the devotee proceeds momentarily leaving behind all worldly thoughts to be in communion with the supreme being.

गोपुरम्
Gopuram

'गोपुरम्' दक्षिण भारतीय मंदिरों का प्रवेश-द्वार है। गोपुरम् शब्द का उद्भव वैदिक काल के ग्रामों के गो-द्वार से हुआ और धीरे-धीरे यही गो-द्वार मंदिरों के विशाल प्रवेश द्वार बन गये, जिन्हें यात्रीगण बहुत दूर से भी देख सकते थे।

'गोपुरम्' की भवन-योजना आयताकार होती है। गोपुरम् की पिरामिडीय बनावट को सुदृढ़ता प्रदान करने के लिए इसकी सबसे नीचे की दो मंज़िलें ऊँचाई में बराबर बनाई जाती हैं।

Gopuram is a South Indian temple gateway. *Gopuram* derived its name from the 'cow-gate' of the villages of vedic period and subsequently became the monumental entrance gate to the temple and can be seen from a distance.

The *gopuram* is oblong in plan. The two lowermost storeys are vertical in order to give a stable foundation for the pyramidal structure of the *gopuram.*

मंडप
Mandapa

'मंडप' सामान्यत: एक स्तंभयुक्त सभागृह अथवा ड्योढ़ी (द्वार मंडप) होता है, जहाँ पर भक्तगण मंदिर की देवी, देव अथवा ईश्वरीय प्रतीक को अपना भक्ति-भाव समर्पित करने से पहले एकत्रित होते हैं।

'मंडप' को सीधे गर्भ-गृह से भी जोड़ा जाता है। इस मंडप को पूर्ण रूप से या इसका कुछ भाग बंद किया जा सकता है अथवा मंडप को बिना दीवारों के भी बनाया जा सकता है।

कुछ मंदिरों में, उदाहरणार्थ-महाबलीपुरम में, समुद्र तट पर स्थित मंदिर के मंडप तथा कांचीपुरम् स्थित कैलाशनाथ मंदिर में मंडप मुख्य तीर्थमंदिर से अलग बने हुए हैं।

Mandapa is usually a pillared hall or a porch-like area where devotees assemble before moving into the sanctum sanctorum of the temple.

A *mandapa* may be attached to the *garbha-griha* directly. The structure may be entirely or partially enclosed or without walls.

In some temples like the Shore Temple at Mahabalipuram and the Kailasanatha temple, the *mandapa* is separate from the main shrine.

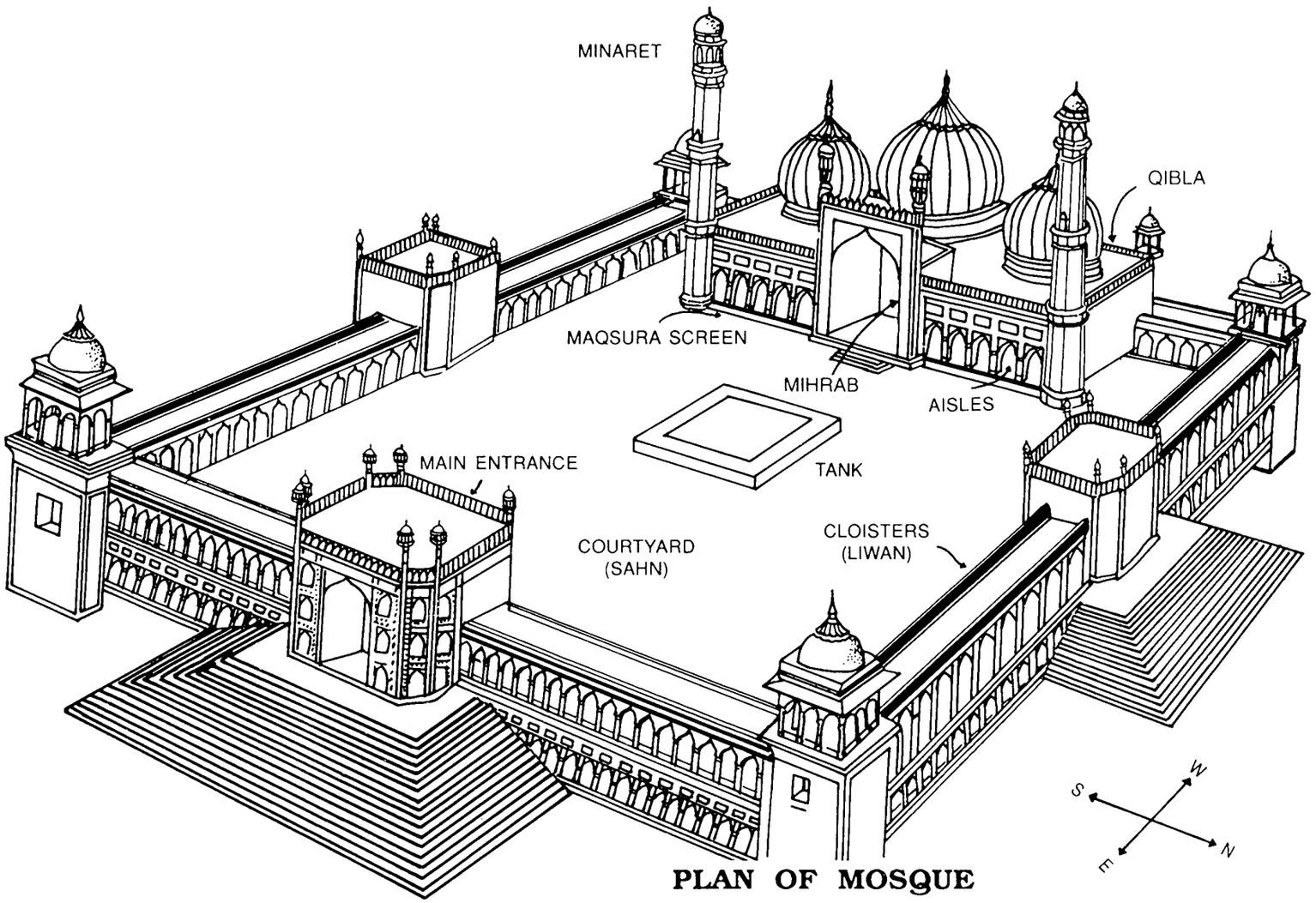

PLAN OF MOSQUE

किबला
Qibla

मस्जिद या प्रार्थना-स्थल की काबा (मक्का) की तरफ की दीवार को किबला कहते हैं। इसी कारण क्षेत्र विशेष की भौगोलिक स्थिति की वजह से किबला की दिशा हमेशा एक-दूसरे से अलग रहती है।

Qibla is the wall of the mosque or prayer hall oriented towards the Kaaba of Mecca. It is, therefore, varying in direction according to the geographical region.

मेहराब
Mihrab

मेहराब, किबला दीवार में बने आले को कहते हैं। प्रायः यह आदमकद होता है और मक्का की सही दिशा दिखाता है।

Mihrab is a niche or alcove, usually the height of a man. It is set into the *qibla* wall of a prayer hall and indicates the precise direction of Mecca.

मक़्सुरा
Maqsura

मस्ज़िद के किबला के आखिरी सिरे को मक़्सुरा कहते हैं। रेलिंग के मार्फत यह हिस्सा अलग रहता है तथा इसका उपयोग केवल शाही व्यक्ति या मौलवी ही कर सकता है।

Maqsura is a railed off area at the qibla (wall) end of a mosque. It is reserved for the chiefs of the community or rulers.

लिवान
Liwan

लिवान मस्ज़िद का स्तंभों वाला कमरा होता है।

The pillared cloister of a mosque is known as *Liwan.*

सहन
Sahn

मस्ज़िद के आँगन की खुली जगह को सहन कहते हैं। यहीं पर सभी लोग नमाज पढ़ने के लिए इकट्ठे होते हैं।

Sahn is the courtyard of a mosque where the faithful assemble for prayers.

विश्व सांस्कृतिक सम्पदा–भारत

विद्यार्थियों एवं अध्यापकों के लिए रचनात्मक गतिविधियां

इस पैकेज में दिए गए 24 रंगीन चित्रों को आप कक्षा या स्कूल के किसी महत्वपूर्ण स्थान पर प्रदर्शित कर सकते हैं। इन चित्रों को आप गत्ते पर लगा कर इनका शीर्षक तथा चित्र के पीछे दिया गया मुख्य विवरण नीचे स्थानीय भाषा में भी लिख सकते हैं। भारतीय कला के शैक्षणिक महत्व को उजागर करने के लिए आप इन चित्रों की गहराई में जाकर उन विषयों के साथ अध्ययन कर सकते हैं, जो इनसे संबंधित हों।

अध्यापकगण भी नीचे सुझाई गई गतिविधियों में छात्रों को सम्मिलित कर चित्रों पर कार्य कर सकते हैं। इससे छात्रों की ज्ञान वृद्धि के साथ-साथ उनका मनोरंजन भी होगा।

केवल बाहरी रेखाओं वाले भारत के बड़े आकार के मानचित्र को लें। उसमें महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थानों एवं शहरों को अंकित करें। विश्व सांस्कृतिक सम्पदा-भारत 1, 2, 3 एवं 4 में दिए गए चित्रों में दर्शाए भवनों के स्थान को पहचानें।

भारत में चट्टानों को काटकर बनाई गई गुफाओं का अध्ययन करें तथा अजंता एवं एलोरा को ध्यान में रखते हुए उन लोगों के बारे में जानकारी एकत्रित करें, जिन्होंने इनका निर्माण किया था। इन गुफाओं के निर्माण-काल तथा इनके उद्देश्य का भी पता लगाएं। इन्हीं से संबंधित निम्नलिखित विषयों के बारे में भी जानकारी एकत्रित करें–

- जलवायु
- प्रकृति-नदी, पेड़-पौधे तथा पक्षी
- गुफाओं के आसपास रहने वाले लोग तथा उनका व्यवसाय आदि।
- उस काल के संगीत, नृत्य, नाटक, शिल्प आदि।
- गुफाओं में दर्शाए गए देवी-देवता, पौराणिक कथाएं, त्यौहार, रीति-रिवाज।

सांस्कृतिक पैकेज में दिए गए भवनों एवं मूर्तियों के चित्रों को देख कर इनके रेखा-चित्र बनाएं।

इन पैकेजों में वर्णित भवनों एवं स्मारकों को देश के प्राचीन एवं मध्यकाल के यात्रियों/इतिहासकारों ने इन पैकेज़ों में दर्ज़ भवनों एवं स्मारकों को देखा तथा वे लोग इनसे संबंधित वृत्तांतों तथा संस्मरणों को लिखकर छोड़ गए हैं। इन वृत्तांतों एवं संस्मरणों को एकत्रित कर उनमें वर्णित इन स्थानों का शैलीगत वर्णन तथा स्थानों के नाम के उच्चारण को समझिए।

अपने स्कूल या घर का भू-चित्र बनाकर उसमें खिड़की, दरवाजों तथा स्तंभों की स्थिति दर्शाइए।

धार्मिक स्वरूप को समझना

सभी धर्मों का एक ही उद्देश्य होता है कि लोग बेहतर एवं संपूर्ण जीवन जिएँ। इन सभी धर्मों का बाह्य रूप, जैसे कि कर्मकांड तथा प्रथाएँ, प्रायः ऐतिहासिक, आर्थिक, राजनैतिक और यहां तक कि भौगोलिक कारणों से एक-दूसरे से भिन्नता रखता है।

कई धार्मिक रीति-रिवाज एवं समारोह कृषि से जुड़े होते हैं तथा वे जीवन के आनंद को व्यक्त करते हैं। प्रायः हर काल के अपने धार्मिक विश्वासों ने अपने युग के वास्तुकारों, मूर्तिकारों एवं चित्रकारों को प्रभावित किया है। इसी

World Cultural Heritage Sites–India

Creative Activities for School Students and Teachers

The 24 pictures provided in this package can be displayed in the classroom or at any prominent place in the school. The pictures may be stuck on card-board with the title and description in the regional language. They can also be studied in depth with activities that bring out the educational value of Indian art. The teachers can work with a few pictures at a time ensuring students' enjoyment in learning by involving them in some activities suggested below:

On a large outline map of India, mark important historical sites and places. Find the location of buildings given in the pictures in the World Cultural Heritage Sites—India, 1, 2, 3, and 4

Make a study of the rock-cut caves in India and collect information of the people who built these caves with special reference to Ajanta and Ellora caves. Find out the dates of these caves and for the purpose they were used. Collect the following information:

— Climate
— Nature–rivers, plants, animals and birds
— People living around the caves, their occupation, etc.
— Music, dance, drama, crafts, etc. of the period
— Customs, festivals, myths, gods & goddesses depicted in these caves.

Make a sketch/rough outline of the buildings/sculptures from the pictures provided in the Cultural Packages.

The buildings/monuments mentioned in these packages were visited by a number of travellers/historians in ancient and medieval periods of Indian history and these travellers have left a vivid and interesting account of these buildings/monuments. Collect such travelogues/memoirs. Notice interesting details in these travelogues, such as the style of descriptions, pronunciations of places and the surrounding areas of monuments of that period.

Make a simple ground plan of your school, home or college and show windows, doors and pillars.

Understanding religious concepts

All religions aim at helping us to lead better and richer lives. The outward manifestations of religion such as rituals, customs differ from one another for historical, economic, political and even geographical reasons. Many religious rituals and ceremonies are linked with the annual agriculture cycle and the celebration of life. Religious beliefs have influenced the architects, sculptors, and painters of the by-gone era to create beautiful monuments using specific symbols and motifs pertaining to each religion.

Invite your students to study the religions and people of India and collect information on each religion such as Hinduism, Buddhism, Christianity, Islam, Jainism, Sikhism and others.

— Choose pictures from the World Cultural Heritage Sites in India—1, 2, 3 and 4 of religious monuments, sculptures and paintings and write descriptions;
— Collect quotations which contain the essence of the philosophy of each faith;

कारण कारीगरों ने उस धर्म से संबंधित विशेष प्रतीकों का इस्तेमाल करते हुए सुंदर स्मारकों की रचना की है।

अध्यापकगण अपने छात्रों को भारत के लोगों एवं उनके विभिन्न धर्मों का अध्ययन करने को कहें। साथ ही उनसे हिंदू, बौद्ध, ईसाई, इस्लाम, जैन तथा सिख आदि हर धर्म के बारे में जानकारी जुटाने के लिए भी कहें।

– विश्व सांस्कृतिक संपदा-भारत के 1, 2, 3, एवं 4 में से धार्मिक स्मारकों, मूर्तियों एवं रंगचित्र का चुनाव करें और हुलिया लिखें।

– हर मत के दर्शन को प्रकट करने वाली उक्तियों, लेखों का संग्रह करें।

– प्रत्येक धर्म की प्रार्थना से जुड़े अनुष्ठान के चित्रों को एकत्रित करें।

– हर जाति के महत्वपूर्ण संतों, कवियों, अध्यापकों तथा प्रख्यात व्यक्तियों के बारे में कहानियां और लेख लिखें।

– किसी एक धर्म, उदाहरणार्थ ईसाई धर्म को लें तथा

: ईसा मसीह

: सेन्ट ज़ेवियर

: मदर टेरेसा

का जीवन वृत्तांत लिखें।

या

: भगवान शिव, महिषासुरमर्दिनी, भगवान बुद्ध तथा महावीर के बारे में कहानियां लिखें।

: त्यागराज, तुलसीदास, मीराबाई

या

: पैगम्बर मोहम्मद, शेख सलीम चिश्ती के बारे में लिखें।

– विभिन्न स्मारकों का निरीक्षण कर भवन के फर्श, उत्थापन योजना तथा सजावट का अध्ययन करें।

त्यौहार एवं लोग

– सभी धर्मों के वर्ष भर मनाए जाने वाले त्यौहारों का एक कैलेंडर बनाएं। यह भी बताएं कि वे किस प्रकार मनाए जाते हैं। इस कैलेंडर में–

: तिथि, मास

: त्यौहार से संबंधित कथा या मिथक

: मनाने का कारण

: त्यौहार से संबंधित गतिविधियां, जैसे कि अनुष्ठान, परिधान, खाद्य-पदार्थ, गीत, नृत्य आदि हों।

– विश्व सांस्कृतिक सम्पदा-भारत के 1, 2, 3 एवं 4 में से चित्रों को प्रदर्शित कर अधोलिखित विषयों को क्रमवार चित्रित करें–

: शिलाखंडों को तराश कर की गई वास्तुकला

: हिंदू मंदिर

: इस्लामी स्मारक

: बौद्ध मंदिर

— Collect pictures of rituals connected to prayer of each religion;

— Write stories of important saints, poets, teachers and important members of each community;

— Collect symbols associated with different religions and find their meaning and significance.

— Take one religion such as Christianity and write about the life of :

: Jesus Christ

: St. Xavier

: Mother Teresa

or

— : Stories about Siva, Mahisasuramardini, Lord Buddha, Lord Mahavira

or

: Thyagaraja, Tulsidas, Mira Bai

or

: Prophet Mohammad, Sheikh Salim Chisti

— Visit various monuments and study the floor and elevation plans and decorations of the building.

Festivals and People

— Make an annual calendar of festivals of all religions and describe how each one is celebrated, the calendar may include:

: Date, month

: Story or myth related to the festival

: Reason or purpose of celebration

: Activities connected with festival which may include customs, costume, food, songs, dances, etc.

— Exhibit pictures provided in the World Cultural Heritage Sites—India, 1, 2, 3 and 4 to illustrate the following themes in chronological sequences:

: Rock-cut architecture

: Hindu temples

: Stupas

: Islamic monuments

: Churches and Convents

: चर्च एवं कॉन्वेन्ट्स

सुलेख एवं चित्रण

किसी मनपसंद कविता को चुन कर उसे कोरे कागज के मध्य में लिखें। आपने स्मारकों या हस्तलिखित पुस्तकों में सुलेख को सजावटी प्रतीक के तौर पर इस्तेमाल किया हुआ देखा होगा। जो कविता आपने कागज के मध्य में लिखी थी, उसके चारों तरफ पारंपरिक डिज़ाइन व सजावटी प्रतीकों का उपयोग करते हुए बार्डर बनाएं।

अधोलिखित विषयों पर निबंध लिखें–

: अजंता की गुफाओं के आसपास रहने वालों का जीवन।

: मेरा मनपसंद शहर।

: मैंने एलोरा के मंदिर-निर्माण में कैसे सहायता की?

: स्मारकों से विहीन विश्व!

: संपूर्ण विश्व में आपसी समझ एवं प्यार को बढ़ाने में स्मारकों की भूमिका।

भारत के राष्ट्रीय पशु, पक्षी, पुष्प के बारे में कविता, निबंध लिखें या उनका चित्र बनाएं। राष्ट्रीय प्रतीक वाली वस्तुओं जैसे कि मुद्रा तथा डाक-टिकटों आदि का संग्रह करें।

भगवान बुद्ध तथा महावीर जैसे महान व्यक्तियों के जीवन से संबंधित ऐसी कहानियां लिखें जो सादगी एवं सच्चाई, जीवन तथा प्रकृति को सम्मान देने के महत्व को दर्शाती हों।

भगवान बुद्ध, महावीर, अकबर तथा राजराजा (प्रथम) आदि के बारे में नाटक लिख कर उनका मंचन करें।

विभिन्न संतों के चित्रों तथा उक्तियों का संग्रह करें।

प्रकृति तथा उसके कला पर प्रभाव विषय पर प्रश्नोत्तरी आयोजित करें। पूछे जाने वाले प्रश्न, प्रकृति व कला के विभिन्न रूपों जैसे मूर्तिकला, चित्रकला, नृत्य, संगीत आदि पर होने चाहिए।

अधोलिखित विषयों पर आप वाद-विवाद एवं भाषण प्रतियोगिताएं भी आयोजित कर सकते हैं–

: भारत की प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक संपदा को क्षति पहुंचाकर विकास का कार्य नहीं होना चाहिए।

: विज्ञान व प्रौद्योगिकी के नाम पर क्या मानव को प्रकृति के साथ खिलवाड़ करना चाहिए?

: क्या हमारे स्रोत हमेशा के लिए खत्म हो जाएंगे?

: हम जो प्रकृति से लेते हैं, क्या उसे वापस करते हैं?

भारत के विभिन्न प्रांतों के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, कला व सामाजिक कार्यों के क्षेत्र में प्रसिद्ध भारतीयों के बारे में कहानियां तथा लेख लिखें।

Calligraphy and Illustrations

Choose any poem that you like and write it neatly in the centre of a clean new page. You may have seen calligraphy on monuments as decorative motifs or in hand-written manuscripts. Try and make a beautiful border around the poem that you have written using traditional designs and decorative motifs.

Write an essay on the following topics in your best handwriting.

: Life of the people living around the Ajanta Caves

: The City I like best today

: I helped to build the Kailasanatha temple at Ellora

Write your views on how the world would be without these beautiful monuments.

Indicate the role these monuments play in enhancing love and understanding.

Write poems, essays or paint pictures of India's national animal, bird, flower and collect items which have the national emblem such as currency notes, stamps, etc.

Write stories of the life of Lord Buddha and Lord Mahavira which teach us values such as respect for nature, life, simplicity and truth.

Write and enact dramas on the lives of Lord Buddha, Lord Mahavira, Akbar, Rajraja I.

Conduct quiz competitions on nature in general and influence of nature on art. These quiz competitions should cover all aspects of nature and all the arts such as sculpture, painting, dance, music, etc.

Conduct debate competitions on some topics such as:

: Development should not be at the cost of losing our natural and cultural heritage;

: In the name of science and technology—should man interfere with nature's master plan?

: Will our resources last forever?

: Do we give back to nature what we receive from it?

Write stories of famous Indians in the field of science and technology, art and social sciences.

Illustrated Cards

विश्व सांस्कृतिक सम्पदा-भारत
World Cultural Heritage Sites-India
2

1. सूर्य मंदिर, कोणार्क, ओड़िशा

वर्तमान ओड़िशा प्रांत की सीमाओं में आज भी सुंदर मंदिरों की एक श्रृंखला विद्यमान है। इन से कलिंग वंश के इतिहास का आद्योपांत ज्ञान होता है।

इस काल की वास्तुरचना की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि कोणार्क का सूर्य मंदिर है। इस मंदिर का निर्माण नरसिंह प्रथम द्वारा 1238-58 ईस्वी के बीच करवाया गया। जैसा कि नाम से स्पष्ट है, यह मंदिर भगवान सूर्य को समर्पित है। यह सूर्य मंदिर एक बड़े चौकोर प्रांगण में स्थित है और इसका निर्माण सूर्यदेव के सात घोड़ों द्वारा खींचे जाने वाले बड़े रथ के समान है। इस मंदिर का रेखा देवल पूर्णतया लुप्त हो चुका है। मंदिर से पहले थोड़ा हट कर एक सभामण्डप है जो शायद कभी नट-मंदिर अथवा भोग-मण्डप रहा होगा। इस मंदिर की छत पिरामिड जैसी है तथा दीवारें उत्कृष्ट ढंग से उत्कीर्ण की गयी हैं।

समस्त मंदिर की संरचना पत्थर द्वारा की गयी है तथा इसे प्रारंभिक यूरोपीय नाविकों द्वारा "काला पैगोडा" कह कर सम्बोधित किया जाता था।

1. Sun Temple, Konarak, Odisha

The present day territory of the state of Odisha has the prized distinction of possessing a series of beautiful temples, illustrating the history of the Kalingas from its inception.

The supreme achievement of the architectural genius of the period is the Sun temple at Konarak. The temple was built by Narasimha I during 1238-58 A.D. As the name suggests, the temple is dedicated to *Surya*. The Sun temple, situated within the centre of a large quadrangular compound, was conceived and designed in the shape of a huge chariot, the *ratha* of the Sun god drawn by seven horses. The *rekha deul* is completely lost. A detached hall which may have been the *natamandir* or *bhogamandapa* precedes the temple. The roof of this building is pyramidal in shape and the walls are exquisitely carved.

The whole temple structure is made out of stone and was called the 'Black Pagoda' by the early European mariners.

2. पार्श्व दृश्य, सूर्य मंदिर, कोणार्क, ओड़िशा

पौराणिक भारत के विभिन्न अंचलों में धार्मिक पर्वों के अवसर पर आयोजित शोभा यात्राओं में देव-मूर्तियों को काष्ठ के बने रथ पर ले जाया जाता था। संभवत: इसी कारण भगवान सूर्य के इस मंदिर को रथ का रूप दिया गया होगा। सूर्य देवता के रथ के चबूतरे पर बारह जोड़ी पहिए उत्कीर्ण हैं। यह बारह जोड़ी पहिए वर्ष के बारह महीनों के प्रतीक हैं।

मंदिर का मुख पूर्व की ओर है तथा जगमोहन के पूर्वी द्वार पर कई समानान्तर स्तर हैं और वहां मानव-आकार से भी बड़ी संगीतज्ञों की आकृतियां हैं, जो उसकी छत पर एक दूसरे से निश्चित दूरी पर स्थित हैं।

यह विश्वास किया जाता है कि इस मंदिर में भगवान सूर्य की कम से कम चार मुख्य प्रतिमाएं थीं। इनमें तीन आलों में एक-एक प्रतिमा (तीन पार्श्व देवताओं की) तथा एक मुख्य प्रतिमा पवित्र स्थल की थी (जो अब वहां नहीं है)।

इस स्थान के बंगाल की खाड़ी के समीप होने के कारण वायुमंडल में उपस्थित लवणता ने इस मंदिर को अत्यधिक हानि पहुँचायी है। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग ने इसको सुरक्षित रखने का दायित्व अपने हाथ में लिया है।

2. Side View, Sun Temple, Konarak, Odisha

The concept of the Sun temple as a chariot may be based on the practice prevalent in various parts of India, of using a large wooden cart, *ratha* for processions of deities through the city streets on festive occasions.

There were twelve pairs of wheels carved on the plinth of the chariot of the Sun God. These twelve pairs of wheels represent the twelve months in the year.

The temple faces east and the eastern doorway of the *jagamohan* has many horizontal levels, there are larger than life size sculptures of musicians who are standing at regular intervals on its roof.

It is believed that there were at least four major images of the Surya at the temple. One in each of the three *nisas* (the three *parsva-devatas*) and one in the main image of the sanctum (which is now lost).

Due to its proximity to the Bay of Bengal, the salt in the moisture has caused extensive damage to the temple. The Archaeological Survey of India, however, has taken up the monumental task of its conservation.

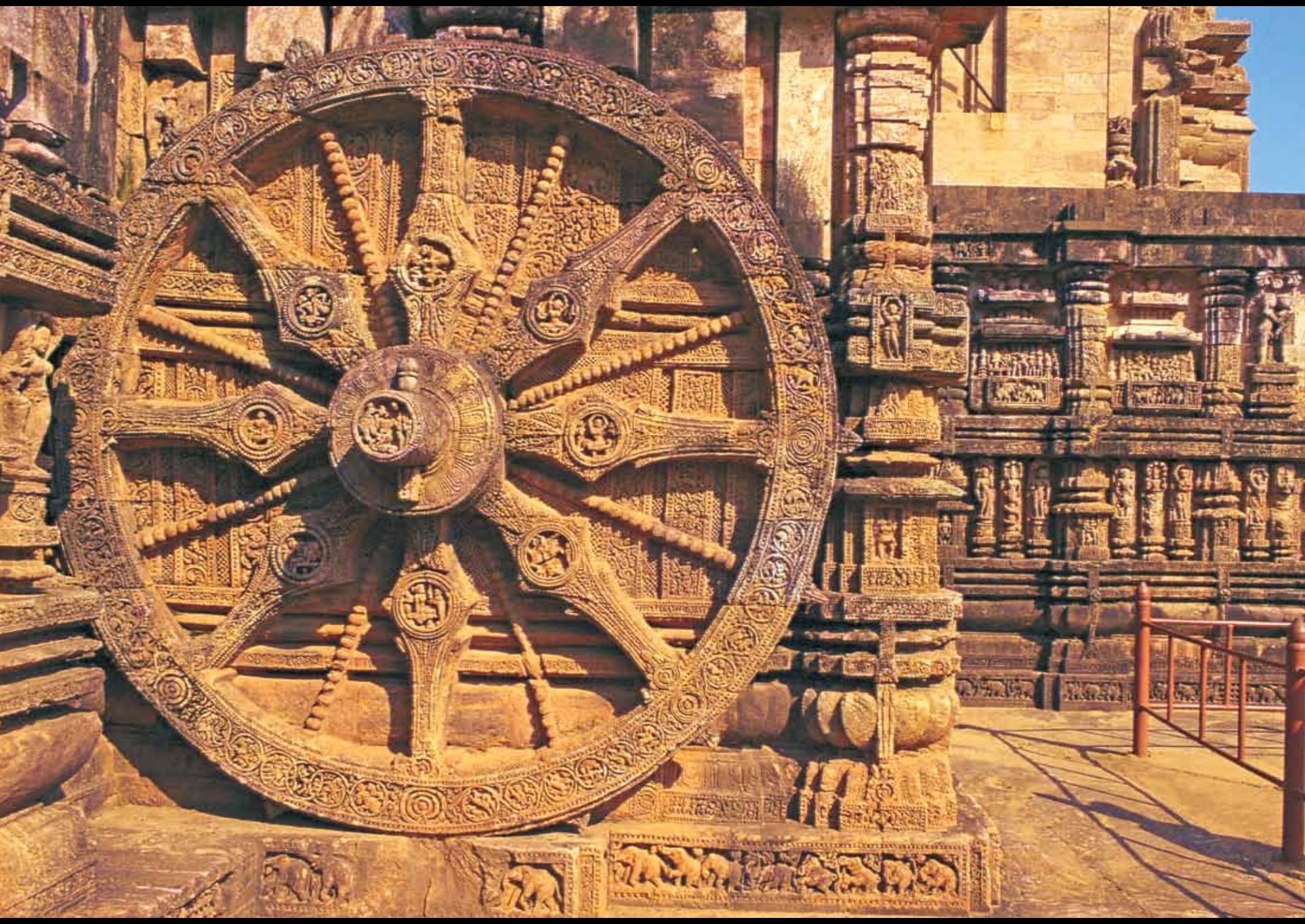

3. चक्र, सूर्य मंदिर, कोणार्क, ओड़िशा

सूर्य मंदिर की सम्पूर्ण डिज़ाइन की कल्पना भगवान सूर्य के दिव्य रथ के रूप में की गयी थी। इस मंदिर में मंत्रमुग्ध करने वाली आकृतियों में इसके विशालकाय चक्र भी हैं। हर चक्र का व्यास तीन मीटर से अधिक है तथा इसकी आठ बड़ी और आठ छोटी अरें हैं। धुरे सहित सभी चक्रों पर बहुत ही आकर्षक रूप से दानेदार घेरों तथा कमल की पत्तियों की पंक्तियां तक्षित की गयी हैं। चक्रों के नीचे की चित्रवल्लरी पर चलते हुए हाथियों के समूह को बड़ी ही सूक्ष्मता से उत्कीर्णित किया गया है।

3. Wheel, Sun Temple, Konarak, Odisha

The complete design of the Sun temple was conceived as the celestial chariot of *Surya*, the Sun God. One of the fascinating features of this temple are its gigantic wheels. Each wheel is more than three metres in diameter and has eight major and eight minor spokes. All the wheels, including its hub have been exquisitely carved with beaded rings and a row of lotus petals. A band of elephants in procession is a running frieze minutely carved underneath the wheels.

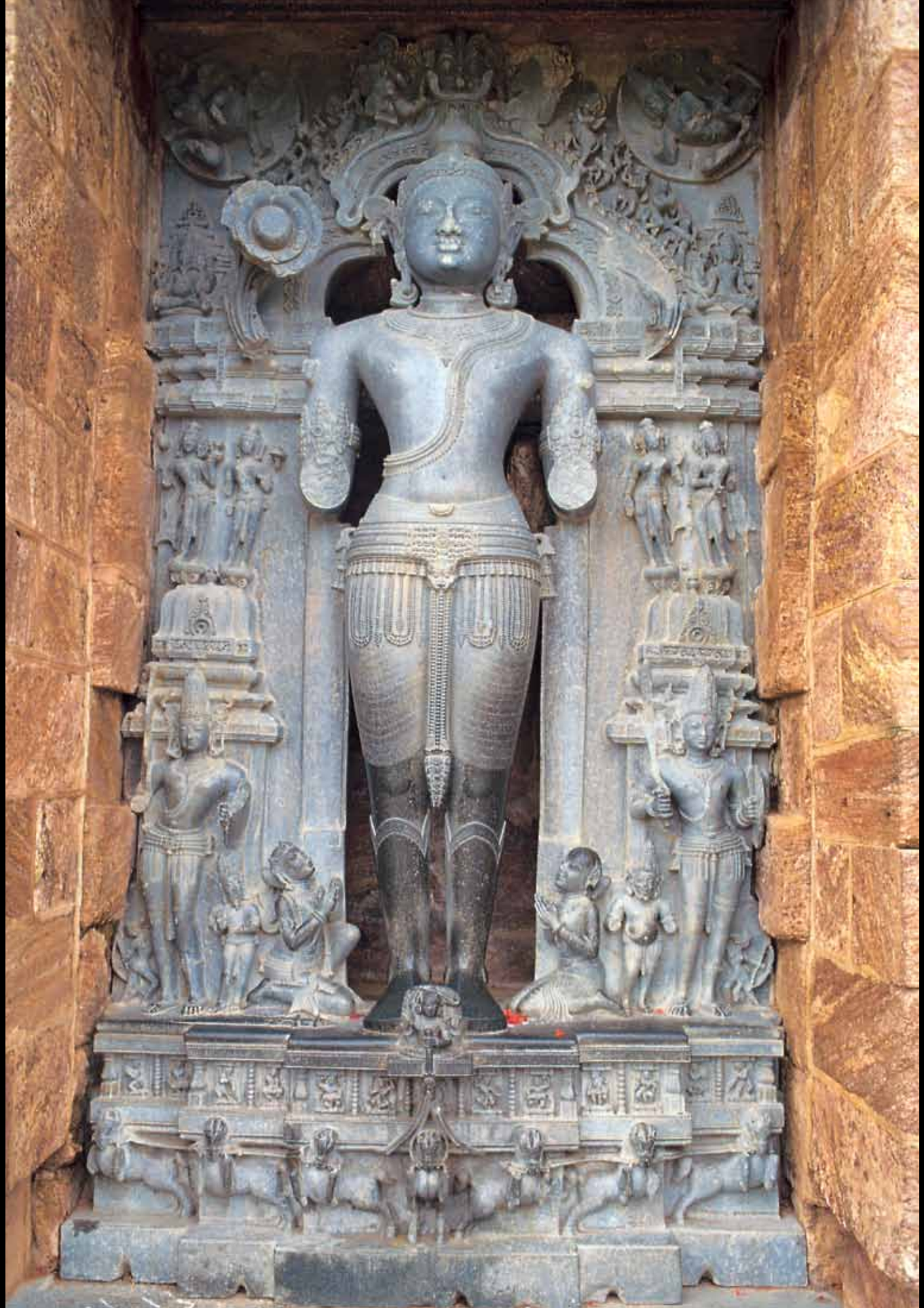

4. सूर्य, सूर्य मंदिर, कोणार्क, ओड़िशा

सूर्य भगवान को ऊर्जा, जीवन तथा ज्ञान का प्रतीक माना जाता है। पुरातन काल से ही सभी संस्कृतियों में सूर्य की पूजा सौर देवता के रूप में की जाती रही है। यह मूर्ति कोणार्क के सूर्य मंदिर की सबसे उत्तम मूर्तियों में से एक है। सूर्य की यह मानवीय आकार से भी बड़ी मूर्ति सात घोड़ों द्वारा खींचे जाने वाले रथ पर बड़े ही भव्य रूप में खड़ी है। इस मूर्ति के चरणों के पास ही इस रथ के सारथी अरुण को हाथ में घोड़ों की रास तथा चाबुक लिए केवल कमर तक ही देखा जा सकता है। सूर्य की मुख्य प्रतिमा को एक छोटी धोती तथा लम्बे पादत्राण (बूट) पहने दिखाया गया है। यह मूर्ति क्लोराइट पत्थर द्वारा निर्मित है।

सूर्य की मूर्ति के अगल-बगल में दिखायी गयी दो दो स्त्रियाँ सम्भवत: सूर्य की चार पत्नियों-रजनी, निक्षुभा, छाया तथा सुवर्चसा- की प्रतीक हैं।

4. Surya, Sun Temple, Konarak, Odisha

The Sun god, *Surya* has been considered as the source of light, energy, life and knowledge. The Sun has been worshipped as the solar deity from ancient times in all cultures.

This is one of the finest sculptures from the Sun temple of Konarak. This, more than life size, image of Surya is standing majestically on a *sapta ratha*, chariot drawn by seven horses. At the bottom, at his feet, *Aruna*, the charioteer, shown upto the waist can be seen holding the reins. The principal image of Surya has been shown draped in a short *dhoti* and wearing long boots. The image is made of chlorite stone.

Four standing females, two each on either side of the Surya image at the level of this elbow may possibly represent the four wives of Surya-Rajni, Nikshubha, Chhaya and Suvarchasa.

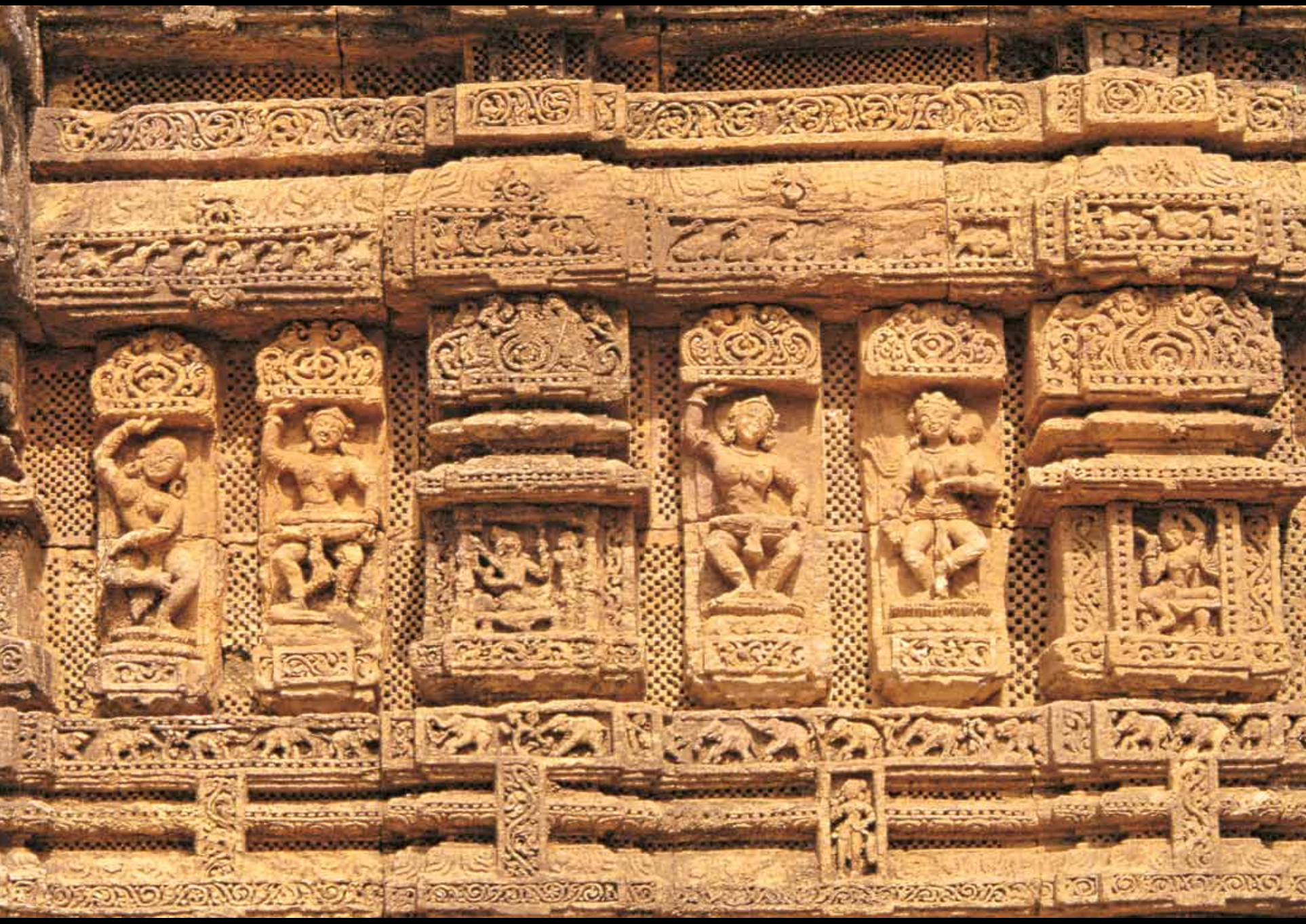

5. तक्षित फलक, सूर्य मंदिर, कोणार्क, ओड़िशा

कोणार्क का सूर्य मंदिर कला का अथाह भंडार है। यहां की मूर्तियाँ, यहां की स्थापत्यकला पर प्रभुत्व तो नहीं रखतीं, परंतु मंदिर की सुन्दरता को बढ़ा देती हैं।

इस मंदिर की मूर्तियाँ क्लोराइट, लेटराइट तथा खोंडेलाइट नामक तीन प्रकार के पत्थरों से बनायी गयी हैं। ये पत्थर अवश्य ही बाहर के स्थानों से यहां लाए गये होंगे, क्योंकि आज इस स्थान के आस-पास इनमें से कोई भी पत्थर उपलब्ध नहीं है।

इस चित्र में आप मंदिर से जरा हट कर बने नट-मंदिर में तक्षित मूर्ति-फलक को देख रहे हैं। इस फलक पर उत्कीर्ण किए गए संगीतकारों के मुख बहुत ही सुन्दर हैं और जीवन के हर्ष और उल्लास को मुखरित करते हैं।

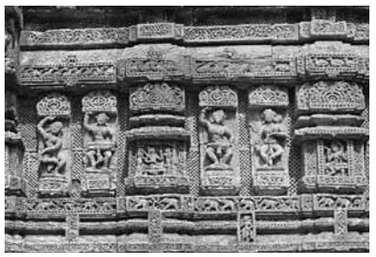

5. Sculptural Panel, Sun Temple, Konarak, Odisha

The Sun temple at Konarak is a treasure house of art. The sculptures of this temple do not dominate the architecture but add to the beauty of the temple.

Three kinds of stones, chlorite, laterite and khondalite have been used for the sculptures. The stone must have been brought from other places as none of these are available in the vicinity today.

In this picture, one sees a sculptured panel in the detached structure of the temple which is commonly known as *nata-mandir*. The faces of the musicians carved in the panel are of great beauty and portray the joy and rhythm of life.

6. विस्तृत विवरण, जगमोहन, सूर्य मंदिर, कोणार्क, ओड़िशा

वास्तुकलात्मक दृष्टि से जगमोहन की संरचना को प्रमुख रूप से चार भागों में विभक्त किया जाता है– पिष्टा (चबूतरा), बाड़ा (लम्बवत् दीवार), गंडी (शरीर का धड़ भाग) और मस्तक (सिर अर्थात् शीर्ष। शिखर-तत्व)। मस्तक, अनुप्रस्थ काट में गोलाकार होता है, तो बाड़ा और गंडी का आन्तरिक भाग अनुप्रस्थ अथवा समस्तर काट में वर्गाकार होता है।

विशाल, निर्बाध रूप से खड़े शिल्प, जगमोहन की छत को सुसज्जित करने वाला कलश नहीं है, अत: इमारत के उच्चतम भाग पर कूल्हों के सहारे बैठे और हाथों को जमीन पर टिकाए हुए, आठ सिंह दिखाई देते हैं, जिनकी पीठ आमला से टिकी है। नीचे की ओर बने शिल्प मानवाकार से बड़े हैं, जिनमें मुख्यत: स्त्री संगीतकारों की शिल्पाकृतियां हैं, जो ओड़िसी नर्तकियों के समान लगती हैं।

6. Detail, Jagamohana, Sun Temple, Konarak, Odisha

Architecturally, the structure of the *Jagamohana* is broadly divided into four parts namely *pishta* (platform), bada (vertical wall), *gandi* (trunk of a body) and *mastaka* (head i.e. crowning element). While the *mastaka* is circular in cross-section, the *bada* and *gandi* are square internally in horizontal sections.

Huge free-standing sculptures also adorn the roof of the *jagamohana*. Since the crowning *kalasa* is missing, the uppermost of the structure shows eight lions seated on their haunches with their hands resting on the ground, and supporting the *amia* on their backs. The lower ones have life size and larger than life size sculptures, mainly of female musicians, in poses similar to those of Odissi dancers.

7. मंदिर समूह, खजुराहो, मध्य प्रदेश

खजुराहो के मंदिरों की कुछ महत्वपूर्ण विशेषताएं हैं। उनमें से लगभग सभी ठोस और ऊँचे चबूतरों (जागती) पर निर्मित हैं। चबूतरे प्रदक्षिणा के लिए भी खुला स्थान मुहैया कराते हैं। इनके प्रवेश-द्वार भवन निर्माण कला व मूर्तिकला के बेजोड़ नमूने हैं। इस चित्र में हम कंदरिया महादेव को देख रहे हैं। इसी चबूतरे पर दाहिनी ओर छोटा महादेव मंदिर तथा उस के बिल्कुल दाहिनी ओर देवी जगदंबा का भी मंदिर देख रहे हैं।

कंदरिया महादेव के मंदिर को खजुराहो का महत्वपूर्ण मंदिर माना जाता है। कंदरिया का तात्पर्य है– "पहाड़ी गुफा में निवास करने वाले शिव" और यह मंदिर भगवान शिव को समर्पित है। मुख्य भवन में संगमरमर निर्मित एक शिवलिंग स्थापित है। मंदिर पूर्वाभिमुखी है और प्रवेश-द्वार एक अकेली चट्टान से बना है। इसमें दोनों ओर से कल्पित मगरमच्छों के मस्तक पर जो माला है उसे चार घुमावदार फन्दों में तराश कर अलंकृत किया गया है।

कंदरिया महादेव और देवी जगदंबा के मंदिरों के बीच छोटे महादेव का मंदिर स्थित है। मंदिर के मंडप में एक झुकी हुई आकृति के साथ शेर की आकृति, मंदिर की महत्वपूर्ण मूर्ति है।

देवी जगदंबा का मंदिर मूलत: भगवान विष्णु को समर्पित था। मगर बाद में देवी की मूर्ति के भग्नावशेषों ने स्वयं ही इसके नाम का निर्णय किया। मंदिर की बाहरी दीवारों पर मूर्तियों की तीन पट्टियां हैं। इसी मंदिर में तीन मस्तक और अष्टभुजा वाले शिव तथा विष्णु भगवान के वराह अवतार की दिलचस्प मूर्तियां भी हैं।

7. Group of Temples, Khajuraho, Madhya Pradesh

There are certain distinctive features of the temples at Khajuraho. Almost all have been constructed on a high and solid platform–the *jagati*. This platform provides an open ambulatory. The doorways are unique achievements of both architecture and sculpture.

In this picture, one sees the Kandariya Mahadev temple sharing the platform with the small Mahadev temple and the Devi Jagadamba temple on its extreme right.

The Kandariya Mahadev temple is considered as the most magnificent temple of Khajuraho. Kandariya denotes 'Siva who dwells in a mountain cave'. A marble lingam is enshrined in the main sanctum. The temple faces east and the gateway is made of a single stone.

The small temple of Mahadev stands between Kandariya Mahadev and Devi Jagadamba temple. A lion alongwith a kneeling figure in the mandapa of the temple are the most important sculptures.

The Devi Jagadamba temple was originally dedicated to Vishnu but later the unfinished image of the goddess determined its name. The temple also has two interesting sculptures of the three-headed eight armed Siva and the Varaha *avatara* of Vishnu.

8. विश्वनाथ मंदिर, खजुराहो, मध्य प्रदेश

खजुराहो के मंदिरों की भवन निर्माण कला एक विशेष स्थान रखती है। प्रायः सभी मंदिर एक ठोस व ऊँचे चबूतरे पर निर्मित हैं।

इस मंदिर की भूतल व उत्थान योजना कंदरिया महादेव एवं लक्ष्मण मंदिरों से काफी साम्य रखती है। रास्ते के साथ तीन चौड़ी पट्टियों पर खजुराहो की सुंदरतम मूर्तियां हैं। विश्वनाथ का यह मंदिर भगवान शिव को समर्पित है, इसी कारण यहां शिवलिंग स्थापित है। इस की छत पर बहुदलीय पुष्प तराशे गए हैं। मंदिर का शिखर शंकु के आकार का है तथा अनेक छोटे शिखरों से घिरा है।

मंदिर के एक अभिलेख से ज्ञात होता है कि राजा धनंगदेव ने इस मंदिर का निर्माण करवाया था तथा उसने यहां एक पत्थर तथा पन्ना मिश्रित शिवलिंग स्थापित करवाया था, पर वह मूल शिवलिंग आज यहां नहीं है।

8. Viswanatha Temple, Khajuraho, Madhya Pradesh

The Khajuraho temples have a distinctive style of architecture. Almost all the temples stand on a high and soild platform.

The ground and elevation plan of the temple resembles the Kandariya Mahadev and Lakshmana temples. The three broad bands of sculptures alongwith the passageway contain some of the most exquisite sculptures of Khauraho. The Viswanatha temple is dedicated to Siva and enshrines a *Sivalinga*. There are many-petalled flowers which have been carved in the ceiling of this temple. The main *shikhara* of the temple is conical in shape and is surrounded by smaller *shikharas* giving the impression of a mountain range.

A stone slab inscription of the temple states that king Dhangadeva built this temple and has installed a stone and emerald lingam.

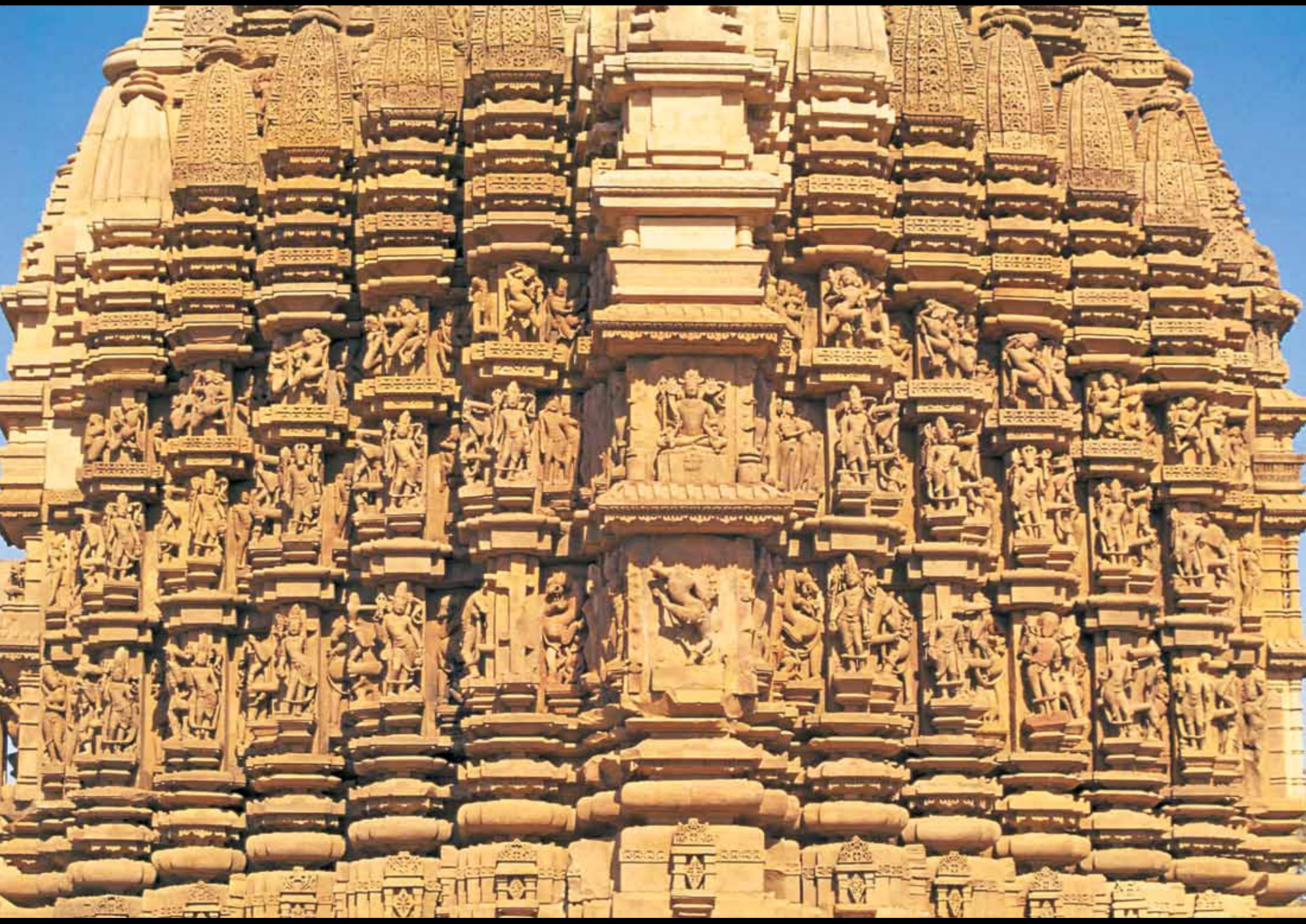

9. मूर्ति पट्ट, दुलादेव मंदिर, खजुराहो, मध्य प्रदेश

खजुराहो के मंदिर मध्य भारत की सदियों के विकास के बाद चरमोत्कर्ष पर पहुंची मंदिर निर्माण कला को साक्षात् करते हैं।

चंदेल-काल में निर्मित खजुराहो स्थित दुलादेव के इस मंदिर को वहां बना अंतिम मंदिर माना जाता है। यह यहां के दक्षिणी स्मारकों के समूह में आता है। इसकी विशेषताएं इसे अन्य मंदिरों से महत्वपूर्ण बना देती हैं। यहां दर्शाई गई नाचती अप्सराओं और तैरती आकृतियों में विलक्षण शक्ति है। इस मंदिर में अन्य मंदिरों की भांति गर्भ-गृह, अंतराल, महामंडप आदि और मूर्तियों की तीन चौड़ी पट्टियाँ हैं। दर्शकों को इन तीनों पट्टियों के फलक में पूर्ण सामंजस्य दिखाई देता है। मंदिर के मध्य में दो मुख्य आकृतियां– पहली बैठे हुए सूर्य भगवान की और दूसरी नटराज की है, पर दूसरी मूर्ति के अवशेष ही रह गए हैं।

दुलादेव का यह मंदिर भी भगवान शिव को समर्पित है। हाल ही में महाराजा छतरपुर के दीवान ने यहां के मूल शिवलिंग को हटा कर नया शिवलिंग स्थापित किया है। यह मंदिर कंवरमठ के नाम से भी प्रसिद्ध है।

9. Sculptural Bands, Duladeo Temple, Khajuraho, Madhya Pradesh

The Khajuraho group of temples represent the culmination of the central Indian style of architecture which had evolved over centuries.

The Duladeo temple is considered one of the last temples built at Khajuraho during the Chandella period. It comes under the southern group of monuments at Khajuraho. The individual features of this temple distinguishes it from other temples. There is a dynamic force shown in the movement of dancing *apsaras* and flying figures. The temple has the usual components like the *garbha-griha*, *antarala*, *maha mandapa*, etc. and three bands of sculptures. The visitor finds a complete harmony of sculptural panels in these bands. In the centre, one can see the two main figures–a seated Surya, the sun god, and the damaged figure of *Nataraja*.

The temple is dedicated to Siva. Recently, the original *Sivalinga* in the shrine has been replaced by a new one by the Diwan of the Maharaja of Chhatarpur. This temple is also known as Kanwar Math.

10. नृत्य-कक्षा, लक्ष्मणमंदिर, खजुराहो, मध्य प्रदेश

खजुराहो की मूर्तिकला का खजाना एक प्रकार से चंदेलों के काल के लोगों के सामाजिक, आर्थिक व धार्मिक जीवन संबंधी जानकारियों का भंडार है। इन मंदिरों के इन अभिलेखों से तो ऐतिहासिक आंकड़े भी इक्ट्ठे किए गए हैं।

यहां मूर्तिकला के अनेक ऐसे फलक हैं, जिन पर सामाजिक-जीवन, नृत्य और संगीत के प्रदर्शन के साथ-साथ विविध विषयों पर चित्र हैं।

इस चित्र में आप लक्ष्मण मंदिर के पट्ट पर गुरु द्वारा शिष्यों को दी जा रही नृत्य कक्षा को देख रहे हैं। इन चित्रों से ललित कलाओं के छात्रों को उस काल के संगीत एवं नृत्य की पुनर्रचना करने में सहायता मिलती हैं, जब कि वे परिष्कृत हो, नए आयाम प्राप्त कर चुकी थीं।

लक्ष्मण मंदिर में भगवान विष्णु की प्रतिमा स्थापित कर यह उन्हें समर्पित कर दिया गया था। यहां के मंदिर-समूह में लक्ष्मण-मंदिर प्राचीनतम है तथा एक शिलालेख के अनुसार इसका श्रेय राजा यशोवर्मन को जाता है।

10. Dance class, Lakshmana Temple, Khajuraho, Madhya Pradesh

The sculptural treasure of Khajuraho is a store-house of information on the social, economic and religious life of people who lived there during the time of the Chandellas. Historical data is also collected from the inscriptions available on these temples.

There are a number of sculptural panels which have miscellaneous themes including scenes from domestic life, performances of dance and music.

In this picture one sees a panel from the Lakshmana temple of a dance class being conducted by the *guru*. Such sculptures help students of the performing arts to reconstruct the music and dance of that period which had reached a high level of sophistication.

The Lakshmana temple is dedicated to Vishnu, enshrining an image of Vaikuntha. The temple is one of the earliest in the group of temples and, according to an inscription attributed to King Yashovarman.

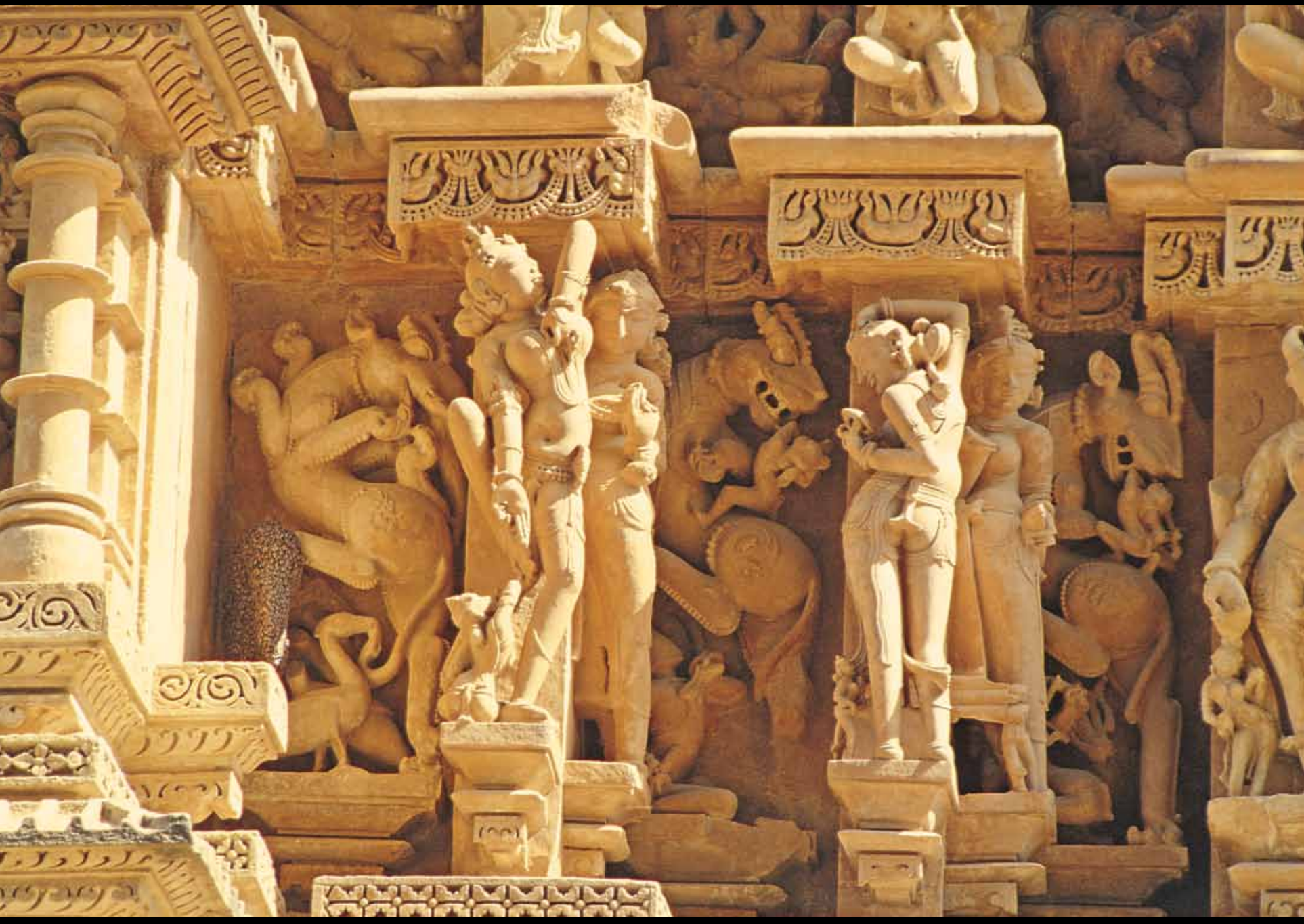

11. तक्षित फलक, लक्ष्मण मंदिर, खजुराहो, मध्य प्रदेश

खजुराहो में भवन-निर्माण-कला व मूर्तिकला का समन्वय बड़ा ही सुंदर है। मंदिरों की आंतरिक व बाहरी दीवारें अधिकाधिक तराशी गई हैं। मुख्य मंदिर की दीवारों पर नारी और सुंदर युगलों की मूर्तियों ने विद्वानों को विभिन्न मतों को प्रकट करने के लिए प्रेरित किया है।

इस चित्र में यह दिखाया गया है कि कलाकार किस प्रकार एक के ऊपर एक मूर्ति को उत्कीर्ण करने में सफल हुआ था। आंतरिक आलों में पौराणिक जानवरों को देखा जा सकता है। यहीं नृत्य की मुद्रा में नारी आकृतियां भी हैं। ये संगीत-वादन कर रही हैं, आईने में स्वयं को निहार रही हैं और सिंदूर, काजल और आलते से स्वयं का श्रृंगार कर रही हैं।

खजुराहो के भवनों और मूर्तियों में ग्रेनाईट तथा बलुआ पत्थर का इस्तेमाल किया गया है।

11. Sculptured Panels, Lakshmana Temple, Khajuraho, Madhya Pradesh

The art of sculpture and architecture merge most beautifully at Khajuraho. The walls of the temples are profusely carved both internally and externally. The profusion of female figures and loving couples in the main temple walls has inspired scholars to offer several theories.

In this picture you see the mythical animals in the inner niches whereas the female figures in dance poses, playing musical instruments, looking in the mirror, adorning themselves with *sindur*, *kajal* and *alta* have been sculpted protruding out of the wall more or less free-standing.

Grantie and sandstone have been used for buildings and sculptures at Khajuraho.

12. मकर तोरण, कंदरिया महादेव मंदिर, खजुराहो, मध्य प्रदेश

प्रवेश या द्वार मार्ग, किसी भी वास्तुकला शैली में, इमारत का सर्वाधिक महत्वपूर्ण तत्व होता है।

एक ही पत्थर से निर्मित, चार चापों (चक्कर) में क्लिष्ट रूप से उत्कीर्णित, कंदरिया महादेव मंदिर का अलंकृत द्वारमार्ग, काल्पनिक मगरों के शीर्षो पर द्वारमार्ग, काल्पनिक मगरों के शीर्षो पर अवस्थित फूलमाला के शीर्षों पर अवस्थित फूलमाला को प्रस्तुत करता है। तोरण की सतह पर आकृतियां, पर्णकार नमूने और वास्तुकलात्मक परिकल्पनाएं (डिजाईन) उत्कीर्णित हैं। आन्तरिक भाग में, स्तंभों और छत पर किया गया उत्कृष्ट उत्कीर्णन, प्रकाश और स्थान का आभास देता है।

चित्र क और ख में हम कंदरिया महादेव मंदिर के उत्कीर्णित तोरण के बाहरी तथा आन्तरिक भाग को देख सकते हैं।

12. Makara Torana, Kandariya Mahadev Temple, Khajuraho, Madhya Pradesh

In any kind of architecture the doorway or entrance is perhaps one of the most important elements of a building.

The ornamental gateway of the Kandariya Mahadev Temple is made of a single stone, intricately carved into four loops, representing a garland that rests on the heads of mythical crocodiles. The surface of the *torana* is carved with figures, foliate motifs and architectural designs. Inside, the exquisite carving of the pillars and ceiling gives a feeling of light and space.

In the picture A and B one sees the view from outside and inside of the carved *torana* of the Kandariya Mahadev Temple.

13. कुतुब मीनार, कुतुब परिसर, दिल्ली

कुतुब मीनार, भारत की वास्तुकलात्मक उपलब्धियों की एक श्रेष्ठ युगान्तरकारी घटना है। निस्संदेह, यह देश के सर्वाधिक प्रभावशाली स्मारकों में से एक है। 72.5 मी. की ऊंचाई लिए हुए इस गगनचुंबी मीनार की परिष्कृत रूप से गोलकार, बालू पत्थर की संरचना का आधार 13.75 मी. व्यास है, जो शिखर तक पहुंच कर शुण्डाकार रूप में केवल 2.75 मी. शेष रह जाता है।

इस शानदार मीनार का आरंभ 12वीं शताब्दी के अंत में हुआ, जब कुतुब-उद्-दीन ने इसे कुतुब मस्ज़िद योजना के एक भाग के रूप में साकार रूप प्रदान किया। हालांकि, इसे अंततः कुतुब-उद्-दीन के दामाद और उत्तराधिकारी इल्तुतमिश ने पूरा किया। प्राचीन समय में भारत की इस उच्चतम पाषाण निर्मित मीनार का मस्ज़िद के रूप में भी प्रयोग किया जाता था, जहां पर मुअज़्ज़िम रोज भक्तों का नमाज़ अदा करने के लिए अजान लगाता था। कुतुब का प्रतीकात्मक अर्थ है न्याय और प्रभुत्व का केन्द्र बिन्दु-स्तंभ।

मूलतः जब कुतुब मीनार पूर्ण हुई तब इसकी चार मंजिलें थीं, पर आज इसकी पांच मंजिलें हैं। पहली तीन मंजिलें, लाल बालू पत्थर और अन्य संगमरमर तथा बालूपत्थर से बनी हुई है तथा प्रत्येक मंजिल बाहर की ओर से अलंकृत छज्जों के कारण स्पष्ट रूप से अलग-अलग दिखाई देती है। पहली तीन मंजिलों में से प्रत्येक की एक भिन्न वास्तुकलात्मक योजना है। चौथी मंजिल सीधे-सादे गोलाकार निर्मित है। फिरोज़शाह के शासन काल में 1368 ईसा प. में जो उच्चतम मंजिल धराशायी हो गई थी, उसे संगमरमर तथा बालूपत्थर की बनी दो मंजिलों द्वारा प्रति स्थापित किया गया। प्रस्तुत चित्र में, हम कुतुब मीनार के अतिरिक्त, कुतुब परिसर की कुछ अन्य महत्वपूर्ण इमारतें भी देख सकते हैं, जैसे– क्वात-उल-इस्लाम मस्ज़िद, अलाई दरवाजा, मदरसे का हिस्सा तथा अला-उद-दीन खिलजी का मकबरा।

13. Qutub Minar, Qutub Complex, Delhi

The Qutub Minar is an outstanding landmark in India's architectural achievements. Undoubtedly, it is one of the most impressive monuments in the country. Dominating the skyline at a height of 72.5 m, this elegantly circular, sandstone structure has a base of 13.75 m diameter which tapers to a mere 2.75 m at the apex.

The origin of the imposing minar can be traced to the end of the 12th century when Qutub-ud-Din conceived it as a part of the Quwwat-ul-Islam mosque scheme. However, it was eventually completed by his son-in-law and successor Iltutmish. The highest stone tower in India till today, the Qutub Minar also served as the minar of the mosque from where the Muezzin made his daily call to the worshippers to come to pray. The word, 'Qutub' signifies a pole, the very pivot of justice and sovereignty.

As originally completed the Qutub Minar comprised four storeys but today it has five storeys, the first three in red sandstone and the remaining two in marble and sandstone, with each storey clearly distinguishable from outside by decorative balconies. The first three storeys are each designed on a different plan. The fourth storey is simply round. The uppermost storey which was damaged in 1368 A.D. during Firoz Shah's reign, was replaced by him by two storeys made of marble and sandstone.

In this picture, one sees, besides the Qutub Minar, some other prominent buildings of the Qutub Complex such as Quwwat-ul-Islam mosque, Alai Darwaza and part of Madrasa and Alaud-Din Khalji's Tomb.

14. विस्तृत विवरण, कुतुब मीनार, कुतुब परिसर, दिल्ली

कुतुब मीनार को विजय मीनार के रूप में भी जाना जाता है, जिसकी प्रत्येक मंजिल एक प्रक्षेपित छज्जे द्वारा विभाजित है। छज्जों के नीचे कुरान की आयतें सुलेख सहित पत्थरों पर उत्कीर्ण हैं। कुतुब मीनार की सबसे प्रमुख विशेषता है कि छज्जों के नीचे पत्थरों की पट्टियों पर उत्कृष्ट सुलेख ऊपरी भाग पर उत्कीर्ण अक्षर निम्न भाग पर उत्कीर्ण अक्षरों की तुलना में काफी बड़े हैं।

मीनार की एक आकर्षक विशेषता है, प्रत्येक मंजिल का एक भिन्न प्रतिमान में बना होना। सबसे निचली मंजिल में 24 लंबी धारियों सहित एकांतर रूप से कोणीय और गोलाकार लंबी धारियां है, दूसरी में गोलाकार, तीसरी मंजिल कोणीय सहित है जबकि चौथी मंजिल साधारण गोलाकार में है। प्रस्तुत चित्र में हम कुतुब मीनार की निचली मंजिल में अलंकृत व्यवस्थित अक्षर और कोष्ठकों में मधुकोश शैली में किया गया विस्तृत उत्कीर्णन देख सकते है।

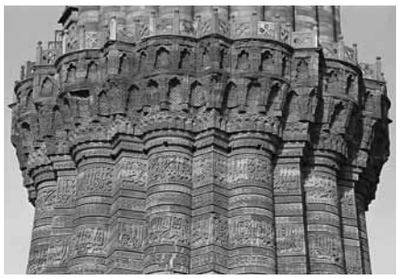

14. Detail, Qutub Minar, Qutub Complex

The Qutub Minar, also known as the Tower of Victory, is five storeys high, each divided by a projecting balcony. Below the balconies are carved stone panels with calligraphy of verses from the Quran. One of the most elegant features of the Qutub Minar is the exquisite inscriptional bands and rich carving on the stone panels below the balconies. The letters at the higher level of the minar are considerably larger than the ones at the lower level.

An attractive feature of the Qutub Minar is that each storey is built on a different pattern. The lowest storey has 24 flutings, alternatively angular and circular, the second has circular flutings, the third is starshaped with angular flutings, while the fourth is simply round. In this picture, one sees, the lowest balcony of the Qutub Minar with elaborate carving of honeycomb work in the brackets and the letters which are set on a floriated background.

15. कुव्वत-उल-इस्लाम मस्ज़िद, कुतुब परिसर, दिल्ली

"कुव्वत-उल-इस्लाम" का शाब्दिक अर्थ है– "इस्लाम की शक्ति"। यह दिल्ली सल्तनत के समय में निर्मित प्राचीनतम मस्ज़िद है। इतने थोड़े समय में इस मस्ज़िद का निर्माण, भारत में विद्यमान प्राचीन मुस्लिम शासकों की धार्मिक, सामाजिक और राजनैतिक धार्मिक, सामाजिक ओर राजनैतिक आवश्यकता थी। 1193 ईसा प. में चौहानों की राजधानी, दिल्ली पहुंचने के बाद, मोहम्मद गौरी ने हिन्दू कारीगरों की मदद से इस मस्ज़िद को बनवाना आरंभ किया और 1197 ईसा प. में कुतुब-उद-दीन ऐबक ने इसे पूर्ण किया। तत्पश्चात इल्तुतमिश और अला-उद्-दीन खिलजी ने इसमें कुछ परिवर्द्धन किए।

मस्जिद में एक आन्तरिक और बाह्य प्रांगण है। आन्तरिक प्रांगण एक उत्कृष्ट रूप से उत्कीर्ण स्तंभावली से आच्छादित है। हालांकि मस्ज़िद की महिमा, मेहराबों की पंक्ति द्वारा व्यक्त होती है, जो उसकी पश्चिमी दीवार किबला दीवार को बंद कर देती है। किबला दीवार पर इस आवरण का केन्द्रीय भाग, पूर्व भारत– इस्लामी वास्तुकला के संमिश्रण का एक प्रथम उदाहरण है।

कुव्वत-उल-इस्लाम मस्ज़िद के प्रांगण में अवस्थित प्रसिद्ध लौह स्तंभ प्राचीन काल में हिन्दू कारीगरों के वैज्ञानिक ज्ञान और कुशलता का एक विशिष्ट उदाहरण है। लगभग 1500 वर्ष पूर्व शुद्ध लोहे से निर्मित इस विशिष्ट स्तंभ में अब तक कोई जंग का निशान नहीं है। हमें इतिहास में कई व्याख्याएं प्राप्त होती हैं। स्तंभ पर उत्कीर्णित एक गुप्तकालीन अभिलेख से ज्ञात होता है कि यह मूलत: राजा चंद्र की स्मृति में निर्मित एक विष्णु ध्वज था। इस राजसी स्तंभ के सपाट, चौकोर, उन्नत शिखर पर एक छिद्र है, जो सूचित करता है कि मूलत: पहले कभी इस छिद्र पर गरुड़ाकृति (विष्णु की सवारी) विद्यमान थी, जो मीनार को सुशोभित करती थी।

15. Quwwat-ul-Islam Mosque, Qutub Complex, Delhi

The word "Quwwat-ul-Islam" literally means "Might of Islam." It is the earliest mosque built during the period of the Delhi Sultanate. The construction of this mosque in the shortest possible time was a religious, social and political need of the early Musilm rulers in India. After reaching Delhi, the capital of the Chauhans, Muhammad Ghori with the help of Hindu artisans started the construction of the mosque in about 1193 A.D. Subsequently, additions were made to it by Iltutmish and Alaud-Din Khalji.

The Mosque consists of an inner and outer courtyard. The inner courtyard is surmounted by an exquisitely carved colonnade. The majesty of the mosque, however, lies in the ground line of arches that closes its western side (*Qibla* Wall). The central part of this screen on the *Qibla* wall is one of the first examples of the blending of early Indo-Islamic architecture.

The famous Iron pillar which stands in the courtyard of the Quwwat-ul-Islam Mosque is a unique example of the scientific knowledge and skills of Hindu artisans of ancient times. Cast from iron of exceptional purity, the unique pillar has not shown any sign of rust in roughly 1500 years of its existence. History offers several interpretations to the origin of the Iron pillar. A Gupta inscription on the pillar records that is was originally a Vishnudhwaj built in memory of King Chandra. The flat, square, towering end of the majestic pillar bears a hole indicating that an image of Garuda (The mount of Vishnu) originally decorated the tower.

16. इल्तुतमिश का मक़बरा, कुतुब परिसर, दिल्ली

कुतुब-उद्-दीन ऐबक के दामाद शम्स-उद-दीन इल्तुतमिश ने 1211 ईसा प. से 1236 ईसा प. तक अपने शासन काल के दौरान भवन-निर्माण-कला को प्रश्रय दिया। स्वयं इल्तुतमिश का मकबरा उस समय की कला की पराकाष्ठा को उद्घाटित करता है।

कुव्वत-उल-इस्लाम मस्ज़िद के उत्तर-पश्चिम में यह मकबरा स्थित है। इस चौकोर सुसंबद्ध मक़बरे की हर दीवार बाहर से 42 फुट और अन्दर से 30 फुट है। इसके पूर्व, उत्तर और दक्षिण तीनों दिशाओं में, प्रवेश-द्वार मार्ग हैं। अपेक्षाकृत सपाट बाहरी भाग के विपरीत, इसका आन्तरिक भाग श्वेत संगमरमर के सन्निवेशनों सहित विस्तारित रूप से उत्कीर्ण है। विस्तारित उत्कीर्णन में कुशन से गृहीत उद्धरणों के अंतर्गत कुफीक और नाशक चरित्रों को प्रस्तुत किया गया है।

मुलतः आयताकार सभागृह के शीर्ष पर गुम्बद अवस्थित था, जो बहुत पहले ही ढह गया।

16. Tomb of Iltutmish, Qutub Complex, Delhi

Shams-ud-Din Iltutmish, son-in-law of Qutub-ud-Din Aibak, whose reign lasted from 1211 A.D. to 1236 A.D. was a renowned patron of architecture. His own mausoleum is the culmination of the art of his period. It is situated on the north-west corner of the Quwwat-ul-Islam mosque. It is a square shaped compact structure measuring 42 square feet from the outside and 30 square feet from the inside. It has three entrance doorways facing the east, north and the south. In contrast to the exterior which is relatively plain, the interior is elaborately carved, and one sees some insertions of white marble. The elaborate carvings comprise extracts from the Koran in Kufic and Naskh characters.

Originally, the dome rested on the top of the rectangular hall which has since collapsed.

17. अलाई दरवाज़ा, कुतुब परिसर, दिल्ली

यह सन् 1311 में निर्मित हुआ था तथा यह अफगान तुर्क फिरोजशाह के खानदान के तीसरे वंशज खिलजी गांव के रहने वाले अला-उद्-दीन खिलजी ने भवनों की जो योजना बनाई थी, उसके अंतर्गत निर्मित हुआ था। अला-उद्-दीन खिलजी सन् 1296 में दिल्ली के शाही तख्त पर बैठा था।

लाल पत्थरों और संगमरमर के सुन्दर मिश्रण से बना यह दरवाजा कुव्वत-उल-इस्लाम मस्ज़िद में दक्षिण की तरफ से प्रवेश करने के लिए बनवाया गया था। योजना में यह दरवाज़ा चौकोर है, जिसकी लम्बाई और चौड़ाई अन्दर से 35 फुट है और बाहर से 55 फुट है। दीवारों की जमीन से छत तक की ऊंचाई 47 फुट तथा मोटाई 11 फुट है।

सदियों पुरानी इस मस्ज़िद का यह शाही दरवाजा पिछली छः शताब्दियों के दौरान थोड़ा सा क्षतिग्रस्त हुआ है। इस प्रवेशद्वार का एक केन्द्रीय कक्ष भी है जो लगभग 16.75 मीटर लंबा है तथा इसका गुंबद लगभग 18.28 मीटर ऊंचा है। इसकी प्रत्येक दिशा के मध्य में प्रवेशद्वार है, जिसके दोनों तरफ जालीदार पत्थरों की खिड़कियां, झरोखे हैं। इस प्रकार का हर प्रवेशद्वार इसी अंदरूनी कमरे में खुलता है तथा उसकी छत गुंबदाकार है। लाल पत्थर के ये दरवाजे स्वयं में अपने प्रकार का पहला निर्माण है, जिनमें इस्लामी वास्तुकला शैली की बनावट एवं अलंकरण का उपयोग किया गया है।

17. Alai Darwaza, Qutub Complex, Delhi

Built in 1311 A.D. the Alai-Darwaza was undertaken as part of the building project of Alaud-Din Khalji–the third in line in the dynasty of Afghan Turks from the village of Khalji–who ascended the throne of Delhi in 1296 A.D. The sandstone gateway was erected to serve as the southern entrance to the Quwwat-ul-Islam mosque. The planning of the gateway is a square measuring 35 feet internally and 55 feet externally. The height of the walls is 47 feet from the floor to the ceiling having a thickness of 11 feet.

The stately entrance to the courtyard of the age-old mosque has suffered little damage in the last six centuries. The gatehouse has a main central hall–a cubical structure of 16.76 m side with a 18.28 m high dome. In the middle of each side is doorway flanked by a pefrorated stone window. Each doorway opens into a single inner room with a domed ceiling. The distinctive surface design and the original conception of the dome of the Alai Darwaza (gateway of Alaud-Din) are its unique features.

The sandstone gateway is the first building of its kind to be found in India employing Islamic principles of construction and ornamentation.

18. अलाई मीनार, कुतुब परिसर, दिल्ली

कुतुब मीनार के उत्तर में यह अधूरी मीनार खड़ी है। अला-उद्-दीन खिलजी ने इसे बनवाना आरंभ किया। कहा जाता है कि बादशाह ने जब मस्जिद के आकार को दोहरा कर, क्षेत्र को विस्तारित किया, तब उसने मीनार को भी वर्तमान कुतुब मीनार की ऊंचाई से दोहरा ऊंचा बनवाने की कोशिश की थी।

लेकिन, जब 24.5 मीटर की ऊंची यह मीनार पहली मंजिल तक ही बन पाई थी, तभी अला-उद्-दीन खिलजी की मृत्यु हो जाने से यह मीनार अधूरी रह गई। अला-उद्-दीन खिलजी की मृत्यु के पश्चात् उसके उत्तराधिकारी उसके इस इच्छित निर्माण कार्य को पूरा नहीं कर पाए। आज भी यह अधूरी मीनार महान् बादशाह की अधूरी अभिलाषा की मूक साक्षी रूप में विराजमान है।

18. Alai Minar, Qutub Complex, Delhi

To the north of the Qutub Minar stands this unfinished minar. It was started by Alaud-Din Khalji. As the emperor had envisaged an enlarged area for the mosque by doubling its size, it is said that he also conceived the Minar to be double the height of the present Qutub Minar.

However, with its extant height of 24.5 metres, it had hardly reached its first storey when he died leaving it incomplete. After the death of Alaud-Din Khalji, his successors could not complete the ambitious task. Today, its skeleton stands like a mute witness to the aspirations of the great emperor.

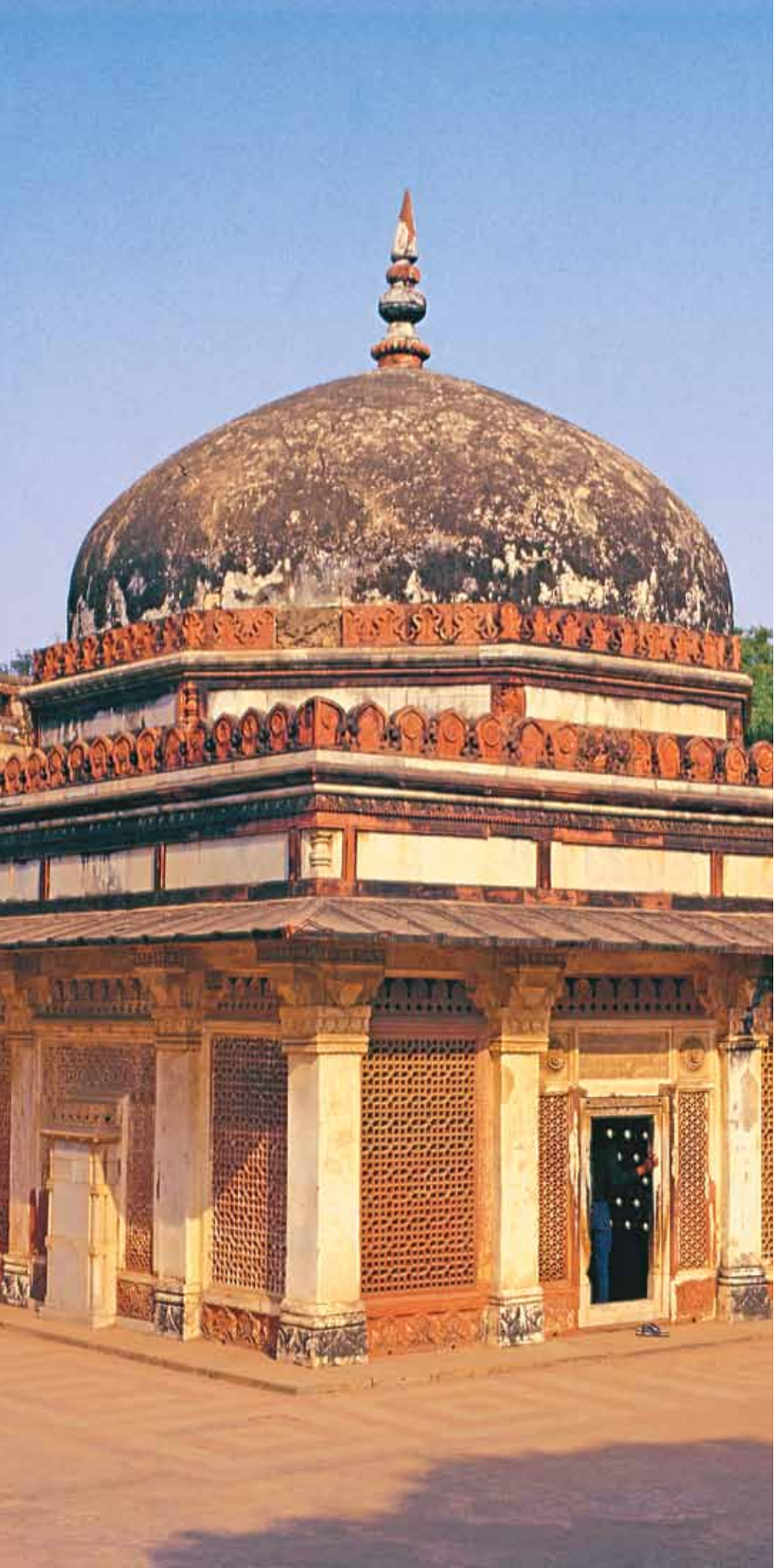

19. क. इमाम ज़मिन का मक़बरा, कुतुब परिसर, दिल्ली

अलाई दरवाजे के दक्षिण-पूर्व में उसके पूर्वी द्वार मार्ग से हो कर इमाम मोहम्मद अली के इस सुन्दर मक़बरे तक पहुचते हैं, जिसे संत इमाम ज़ामिन के नाम से जाना जाता है। तुर्किस्तान का निवासी, इमाम ज़ामिन, सिकन्दर लोदी (1488-1517) के शासनकाल में कुछ धार्मिक अनुष्ठान कर्तव्यों को पूरा करने भारत आया।

यह मक़बरा सब तरफ से छिद्रित आवरणों सहित एक अष्टभुजाकार संरचना है, जिसके शीर्ष पर बालूपत्थर से बना गुम्बद है।

19. ख. गुम्बद, कुतुब परिसर, दिल्ली

मूलतः कुतुब मीनार के शीर्ष पर गुम्बद बना हुआ था। हालांकि, यह गुम्बद एक भूकंप के आने से धराशायी हो गया था। पूर्व उन्नीसवीं शताब्दी में लाल बालू पत्थर से एक नया गुम्बद बनाकर मेज़र स्मिथ ने प्रतिस्थापित किया। गुम्बद की बनावट का मूल वास्तुकला शैली के साथ मेल नहीं हो पाया और इसे 1848 में हटा लिया गया। अब गुम्बद के अवशेष कुतुब मीनार की दक्षिण-पश्चिमी दिशा में स्थित बाग में पड़े हुए हैं।

19. A. Tomb of Imam Zamin, Qutub Complex, Delhi

Adjacent to the south-east of the Alai-Darwaza and approached through its eastern gateway, stands this beautiful tomb of Imam Muhammad Ali, popularly known as Saint Imam Zamin. He was a native of Turkestan, who came to India during the reign of Sikander Lodi to perform certain religious rites/duties.

It is an octagonal shaped structure with peforated screens on all the sides and on top of it rests the dome made of sandstone.

19. B. Cupola, Qutub Complex, Delhi

The Qutub Minar was originally surmounted by a cupola. However, it is believed that it fell down during an earthquake. In the early 19th century, this broken cupola was replaced by a new one built of red sandstone by Major Smith. Since it did not conform with the original architecture, it was brought down in 1848. It is now lying on the lawns to the south-east of the Qutub Minar.

20. हुमायूं का मक़बरा, दिल्ली

भारत पर 16वीं शताब्दी में शासन करने वाला हुमायूं दूसरा बादशाह था। चित्र में दिखाए गए विशाल मक़बरे का निर्माण हुमायूं की मृत्यु के लगभग आठ वर्ष पश्चात् उसकी विधवा, बेगा बेगम (जिसका प्रचलित नाम हाजी बेगम था) ने करवाया था।

राजधानी के प्रसिद्ध मार्ग मथुरा रोड पर स्थित यह मक़बरा पत्थरों के जुड़ाऊ कार्य की उस कला का पहला दर्शन कराता है, जो लगभग एक शताब्दी पश्चात् ताजमहल की सजावट में भी दृष्टिगोचर होती है।

अहाते के बीच में बहुत ऊंचा मक़बरा है। यह एक ऊंचे मंच पर बना हुआ है। बीच के अष्टकोणीय कमरे में नकली कब्र है और इसके चारों तरफ जाली वाले कमरे और मेहराबों वाले बरामदे हैं। कमरे के चारों तरफ तीन महराबें हैं, जिनमें बीच वाली मेहराब सबसे ऊंची है। इसी नक्शे को दूसरी मंजिल पर भी दोहराया गया है। भारतीय वास्तुकला में दोहरे गुंबद वाली संभवत: प्रथम इमारतों में से एक है। आंतरिक गुंबद मक़बरे के कमरों की मेहराबदार छत है जो बाहरी गुंबद इसे बाह्य भव्यता प्रदान करता है।

20. Humayun’s Tomb, Delhi

Humayun was the second Mughal Emperor to rule India in the 16th century. A.D. The lofty tomb of Humayun, one sees in the picture was built by Bega Begam, Humayun’s widow. (popularly known as Haji Begum), eight years after his death.

Standing on the capital’s famous Mathura road, the Humayun’s Tomb offers the first indications of the development of the art of stone inlay which culminated nearly a century later in the exquisite decorations of the Taj Mahal at Agra.

The lofty mausoleum is located at the centre of the enclosure. It rises from a podium faced by a series of arched openings. The central octagonal chamber houses the cenotaph (false tomb) and is encompassed by chambers and arched lobbies with peforated screens. Each side of the chamber is dominated by three arches, the central one being the highest. This plan is repeated on the second storey. For the first time, double domes appear in Indian architecture, the inner shell forming the vaulted ceiling to the tomb chambers and the outer shell creating a majestic external impact.

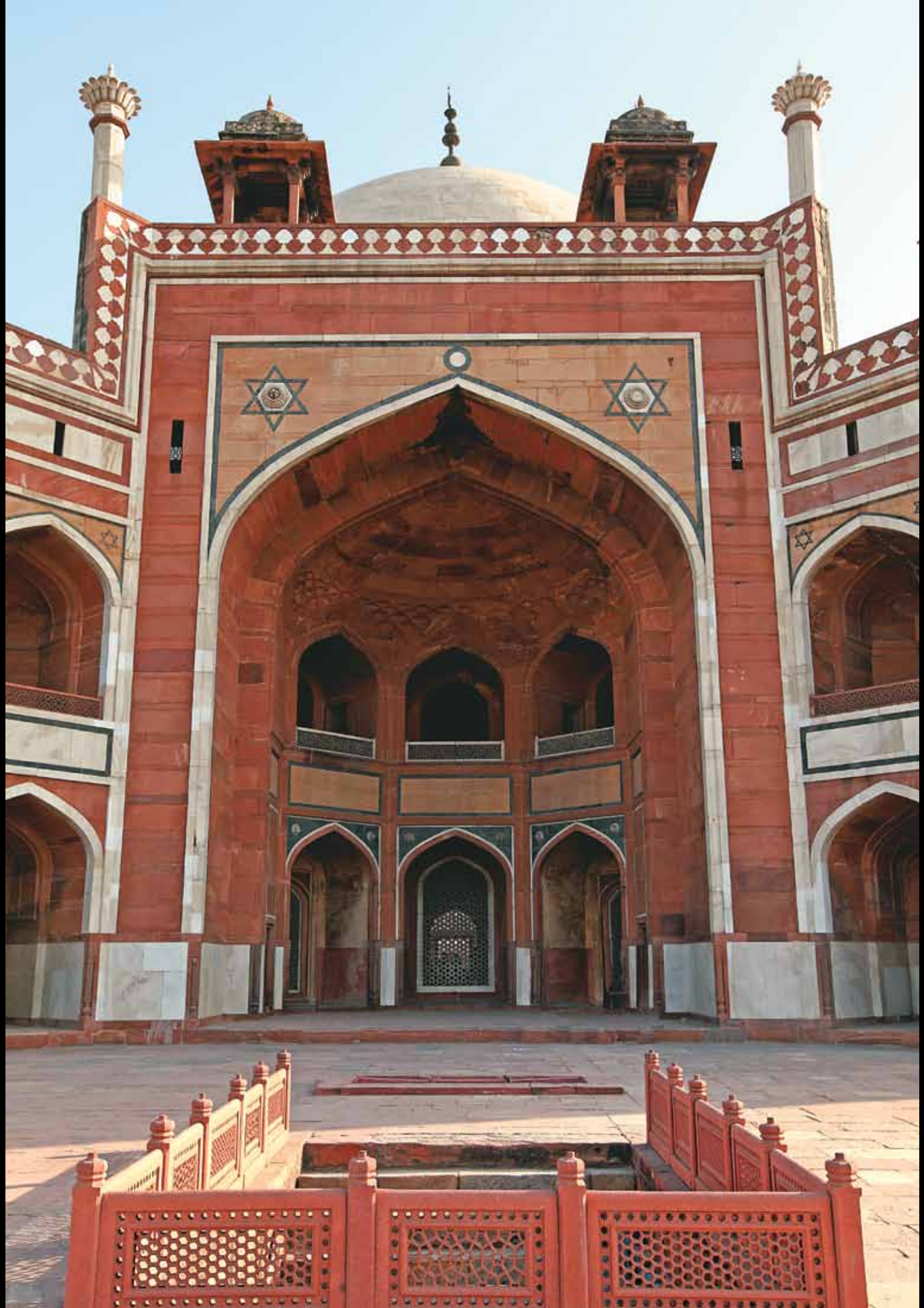

21. अग्रभाग, हुमायूं का मक़बरा, दिल्ली

ईरानी वास्तुकार, मिराक मिर्जा गियात ने हुमायूं के मक़बरे की परिकल्पना (डिजाईन) की। इसके अभिन्यास, योजना तथा परिकल्पना में वास्तुकला की तॅमूरी तथा मुगल शैली प्रत्यक्ष प्रकट होती है। मक़बरे की संरचना-योजना वर्गाकार है। केन्द्रीय ईवान से युक्त प्रत्येक अग्रभाग में प्रवेश द्वार के एक ओर पार्श्व (बगल) में कक्ष है। (इसका कुछ भाग चित्र में देखा जा सकता है)।

प्रस्तुत चित्र में, हम दुमंज़िले विन्यास में लघु मेहराबों की शृंखला से युक्त उत्तरी अग्रभाग देख सकते हैं। निचले कक्ष में अवस्थित मेहराबें, छिद्रित संगमरमरी जालियों से ढंकी हुई हैं। मेहराबों के सभी किनारों तथा बहिर्रेखाओं के निर्माण में श्वेत संगमरमर और काले स्लेट पत्थर का बहुतायत में प्रयोग किया गया है तथा अग्रभाग के कोने तिरछे बने हुए हैं।

अग्रभाग की मेहराबों के ऊपरी स्थान को चाप-स्कंध कहा जाता है और इसके ऊपर षट्कोण, एक आलंकारिक विशेषता है, जो हमें अधिकतर इस्लामी स्मारकों में प्राप्त होती है। संभवत: यह छह ऋतुओं का प्रतीकात्मक प्रस्तुतीकरण है, जिसका हिन्दू शिल्पकारों ने प्रवेश-द्वारों तथा मेहराबों को अलंकृत करने के लिए प्रयोग किया है। कुछ विद्वानों का मत है कि यह इमारतों पर अंकित किया गया एक शुभ चिह्न है।

21. Facade, Humayun's Tomb, Delhi

Humayun's Tomb was designed by an Iranian architect, Mirak Mirza Ghiyath. The synthesis of Timurid and Mughal style of architecture is apparent in its layout, plan and design. The tomb structure is square in plan. Each facade is composed of a central *iwan* containing a portal, flanked by a wing on either side (partly seen in the picture).

In this picture, one sees the northern facade which has a series of smaller arches in a double-storeyed arrangement. The ones in the lower-wing are closed by perforated marble screens or *jalis*. White marble and black slate have lavishly been used on all edges and outlines of the arches. The corners of the facade are chamfered.

On the space above the arches known as spandrels of the facade are motifs called *shutkonas*. The six pointed Star of David or *shutkona* is an interesting decorative feature which appears on several Islamic monuments. In all probability it is the symbolic representation of the six seasons which Hindu craftsmen freely used to embellish gateways and arches. Some scholars are of the view that it is considered to be an auspicious sign on the buildings.

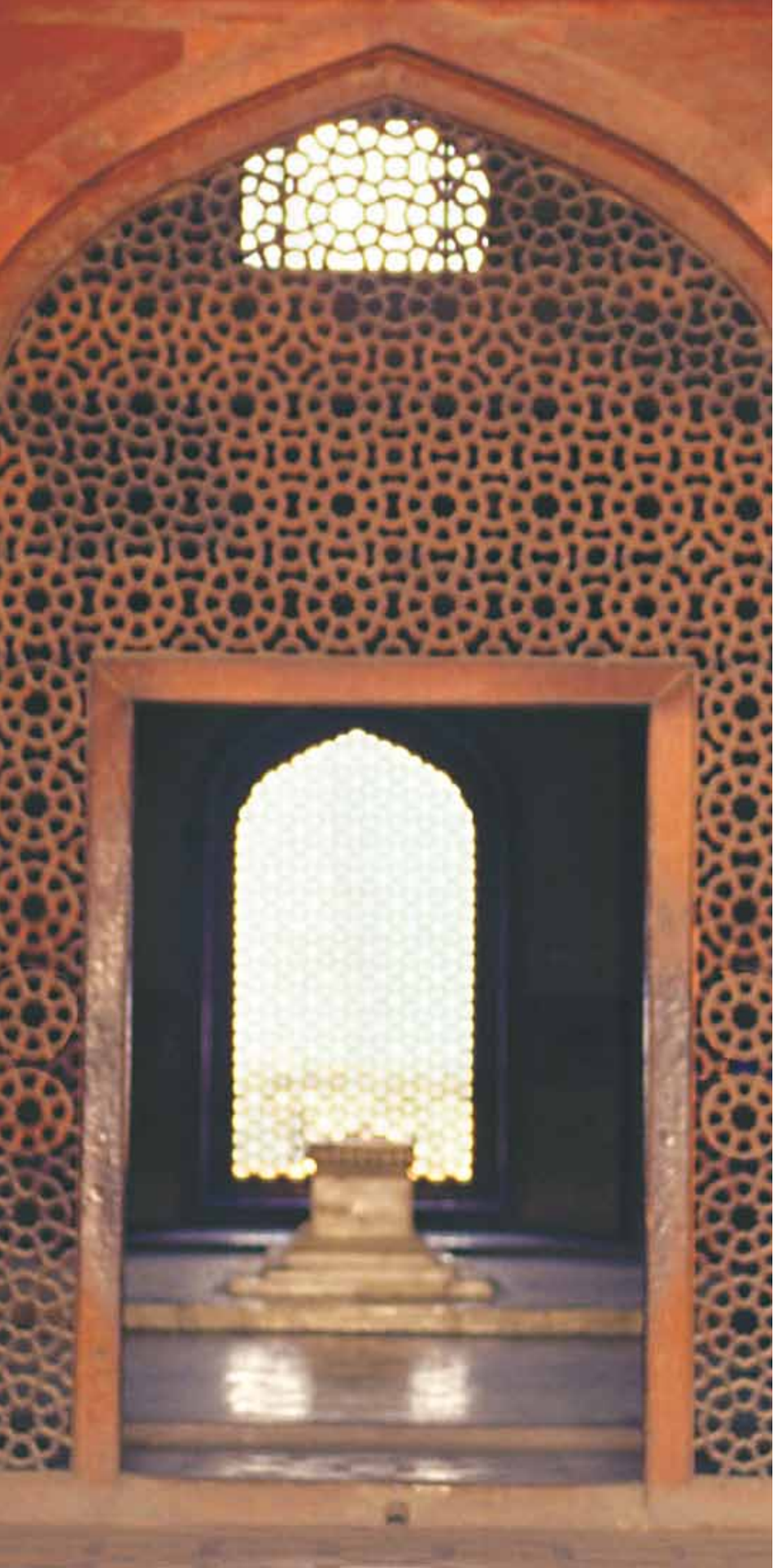

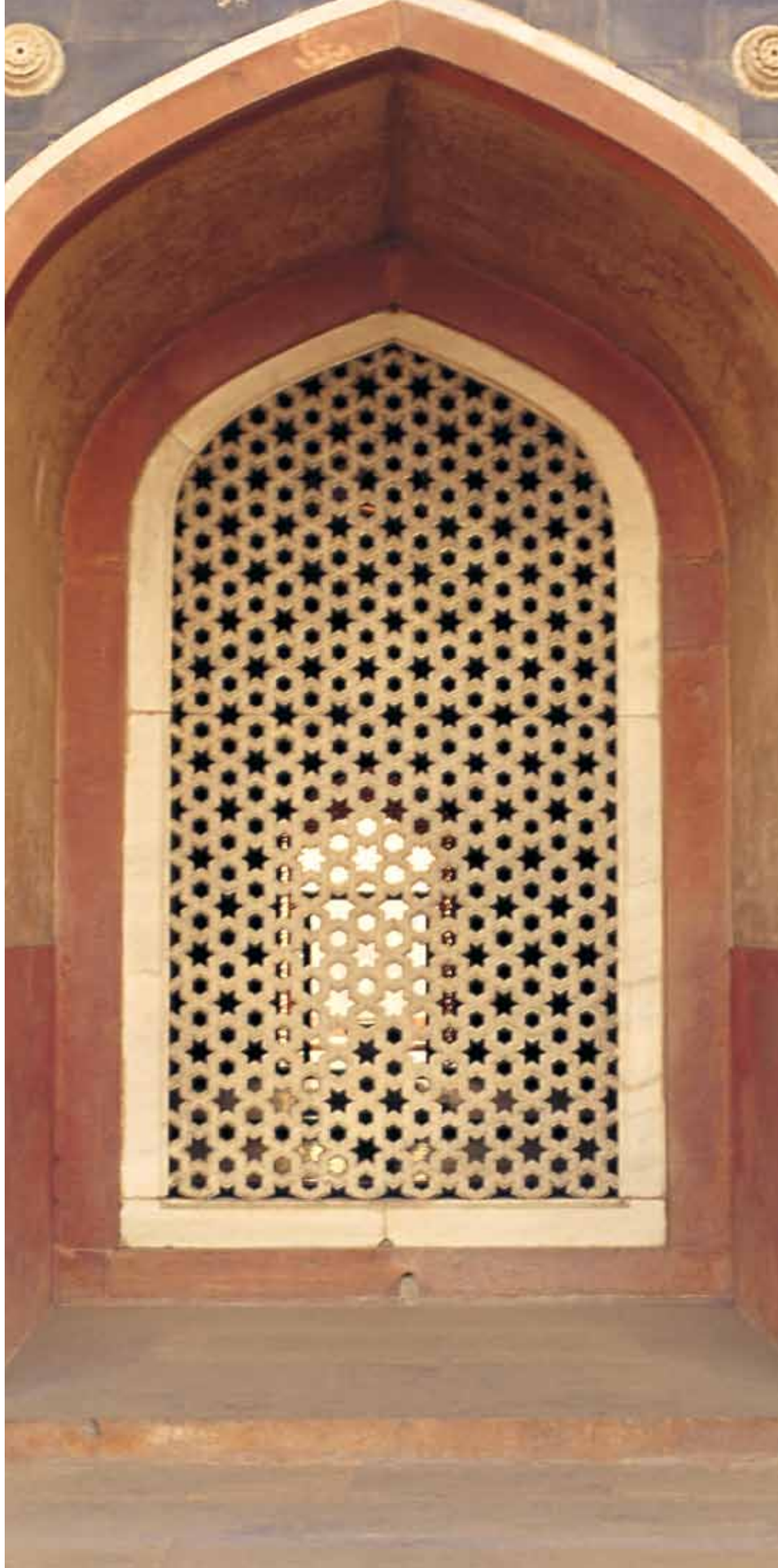

22. केन्द्रीय कक्ष, हुमायूँ का मक़बरा, दिल्ली

हुमायूँ के मक़बरे का आन्तरिक भाग, प्राचीन एक कक्षीय मकबरों के विपरीत बहुकक्षीय है। सम्राट के स्मारक से युक्त, केन्द्रीय अष्टभुजाकार कक्ष, सभी कक्षों में सबसे बड़ा है। इसके प्रत्येक कोने में आनुषंगिक कक्ष सुरुचिपूर्ण ढंग से बने हुए हैं, जो विकिरणकारी बरामदों तथा क्लिष्ट आन्तरिक जाली काम और व्यवस्था से युक्त गलियारों द्वारा केन्द्रीय कक्ष के साथ विकर्णत: जुड़े हुए हैं।

केन्द्रीय कक्ष के प्रवेश-द्वार पर एक लाल बालू पत्थर से जाली बनी हुई है। (चित्र क) रोचक बात यह है कि जाली की यह परिकल्पना (डिज़ाइन), आगे की ओर स्थित फर्श पर भी बनी हुई है। प्रवेश के अतिरिक्त बाह्य भाग में अवस्थित सभी निचली मेहराबें छिद्रित संगमरमरी जालियों से ढँकी हुई हैं। (देखें चित्र 'ख') इनके चाप स्कंधों पर हम गचकारी तकनीक से बनी रूढ़ शैलीगत परिकल्पनाओं (डिज़ाईन) से युक्त गोलाकार फलक या चित्र देख सकते हैं। इस तकनीक में, पत्थर या पलस्तर की सहायता से अलग से बने आलंकारिक तत्वों को अंतिम रूप प्राप्त पत्थर की दीवार पर चिपकाया जाता है।

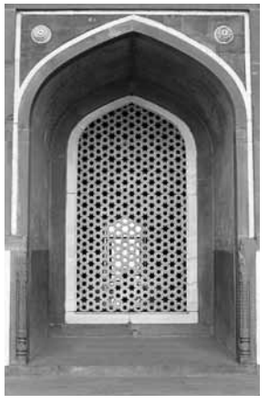

22. Central Chamber, Humayun's Tomb, Delhi

The interior of the Humayun's Tomb comprises several chambers unlike the earlier mausoleum's which had a single chamber. The central octagonal chamber which houses the cenotaph of the emperor is the largest of all the chambers. The ancillary chambers are located elegantly at each corner of the structure and diagonally connected with the central chamber through radiating passages and corridors in an intricate interior network and arrangement.

The *jali* at the entrance of the central chamber is made out of one red sandstone (picture A). Interestingly this design of the *jali* is duplicated on the floor in front of it. All the lower arches on the exterior, except the entrance, have been closed by perforated marble *jalis* (as seen in picture B). On their spandrels, one sees medallions bearing stylised designs in stucco technique. In this technique decorative elements made separately out of stone or plaster are pasted on final stone wall.

23. कब्रगाह, हुमायूँ का मक़बरा, दिल्ली

'हुमायूँ का मक़बरा' परिसर में भूतल में स्थित कक्षों के तहखाने में बहुत से समाधि प्रस्तर हैं, जिनमें से कुछ के अदिनांकित होने के कारण पहचानना मुश्किल है। हम प्राप्त अभिलेखों के आधार पर कुछ समाधि-प्रस्तरों की तारीख निर्धारित कर सकते हैं।

इस्लाम में, मृत व्यक्ति के चेहरे को मक्का की दिशा में रखा जाता है और मक़बरे में शरीर को उत्तर-दक्षिण दिशा में रखा जाता है। अक्सर, पुरुष के समाधि-प्रस्तर में एक शंकुकार कलमदान और स्त्री के समाधि-प्रस्तर में तख्ती या भारत में स्कूली बच्चों द्वारा लिखने के लिए प्रयुक्त लकड़ी की तख्ती होती है। प्रस्तुत चित्र में दक्षिण-पूर्व कक्ष में स्थित तीन संगमरमर निर्मित समाधि-प्रस्तर देखे जा सकते हैं। इन्हें परंपरागत रूप से, हुमायूँ की तीन पुत्रियों की कब्रों के रूप में जाना जाता है। इसी प्रकार, दक्षिण-पश्चिमी किनारे पर स्थित कक्ष में दो समाधि प्रस्तर हैं (ये चित्र में दिखाई नहीं दे रहे हैं) और उत्तर-पूर्व कक्ष में हाजी बेगम हुमायूँ की बड़ी विधवा और हमीदा बानू बेगम (अकबर की मां) के दो संगमरमरी समाधि-प्रस्तर हैं।

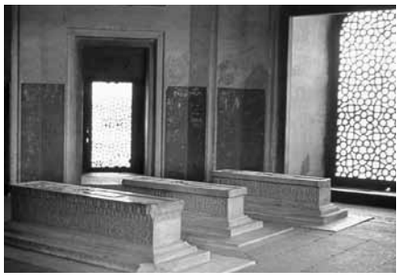

23. Graveyard, Humayun's Tomb, Delhi

In Humayun's Tomb complex there are several tombstones in the catacombs below, some are undated making it difficult to identify them. We can fix the date of a few tombstones by the available inscriptions.

In the Islamic religion the deceased persons face is turned towards Mecca and the body in the tomb is laid in the directionn of north-south. Often a tombstone of a male person carries a conical shaped *qalamdan* (pen holder) and a female person, a *takhti* or the wooden writing board used by school children in India.

The south-east chamber has three marble tombstones, as one sees in the picture, traditionally known as the graves of the three daughters of Humayun. Similarly, the south-west corner chamber has two tombstones (which cannot be seen in the picture) and the north-east chamber contains two marble tombstones of Haji Begum (senior widow of Humayun) and Hamida Banu Begum (Akbar's mother).

24. बार्बर का मक़बरा और नीला गुंबद, दिल्ली

हुमायूँ के मक़बरे के दक्षिण पूर्व में बार्बर का मक़बरा अवस्थित है। मक़बरे में दो कब्रें हैं, किन्तु उनसे हमें यह संकेत नहीं मिल पाता कि भीतर दफनाए गए व्यक्ति कौन है। यह मक़बरा बाह्य रूप से वर्गाकार और आन्तरिक रूप से अष्टभुजाकार है। इस पर दो गुंबद हैं।

चित्र में बार्बर के मक़बरे के निकट ही हम नीला गुंबद देख सकते हैं। बार्बर के मक़बरे के विपरीत, नीला गुम्बद बाह्य रूप से अष्टभुजाकार और आंतरिक रूप से वर्गाकार है। मक़बरे की रंग योजना में तुर्की नीलरंग की श्रेष्ठता, अनगढ़ पत्थर और प्लास्टर से निर्मित होने के कारण लोकप्रिय रूप में इन 'नीली खपरैलों' से आच्छादित है। यह विश्वास किया जाता है कि 'नीला गुंबद' अब्दुर्रहीम खान खाना (अकबर के नवरत्नों में से एक) द्वारा निर्मित करवाया गया था, जो अब्दुर्रहीम खान के अनुचर फ़हीमखान के शेष उपक्रमों से अन्तर्विष्ट है।

24. Barber's Tomb and Nila Gumbad, Delhi

On the south-east of Humayun's tomb stands the Barber's tomb. The tomb has two graves but they give us no clue of the persons buried therein. It is square in shape from outside and octagonal from inside. It has a double dome.

Adjacent to Barber's tomb, one sees in the picture the Nila Gumbad. In contrast to the Barber's tomb, Nila Gumbad is octagonal in shape from outside and square within. Built of rubble and plaster, turquoise blue predominates in the colour scheme of this tomb, hence popularly known as "Nila Gumbad". The dome is entirely covered with blue tiles. It is believed that the Nila Gumbad was built by Abdur Rahim Khan-i-Khanan, one of the *nav-ratnas* of Akbar and contains the remains of Fahim Khan, servant of Adbur Rahim Khan.